कर्नाटक संगीत

माध्यमिक स्तर

प्रयोगात्मक (243)

2

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
आईएसओ 9001 : 2000 प्रमाणित
(मा.सं.वि.मं. भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था)
ए-24-25 इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201301 (उ. प्र.)
वेबसाइट : www.nios.ac.in टोल फ्री नं. - 18001809393

आभार

सलाहकार समिति

- अध्यक्ष
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा
- निदेशक (शैक्षिक)
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा

पाठ्यक्रम समिति

- प्रो. एम. रामनाथन
  कर्नाटक संगीत में प्रोफेसर
  (सेवानिवृत्त)
  मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई
- डॉ. आर. एन. श्रीलता
  कर्नाटक संगीत में प्रोफेसर
  गायन विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय
  मैसूर
- डॉ. नागलवनी सूर्यनारायन
  पूर्व शिक्षिका, यूनि कॉलिज
  ललित कला, मैसूर
- प्रो. राधा वंकटचलन
  कर्नाटक संगीत में प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
  कर्नाटक संगीत विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. टी. एन. पद्मा
  प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
  गायन विभाग, ललित कला,
  मैसूर
- डॉ. उषा लक्ष्मी कृष्णमूर्ति
  कर्नाटक संगीतज्ञ
  मैलापुर, चेन्नई
- प्रो. पी.बी. कन्न कुमार
  प्रोफेसर
  कर्नाटक संगीत विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. टी.के.वी. सुब्रमण्यं
  इतिहास विभाध्यक्ष
  दिल्ली विश्वविद्यालय
  मृदंगं वादक
- प्रो. टी. आर. सुब्रमण्यं
  संगीत शास्त्रज्ञ
  अन्ना नगर, चेन्नई
- डॉ. बसन्त कृष्ण राव
  एसोसियट प्रोफेसर
  कर्नाटक संगीत विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. बी. एम. जयश्री
  संगीत में प्रोफेसर
  पर्फोर्मिंग आर्ट्स विभाग
  बेंगलुरू विश्वविद्यालय
  बेंगलुरू
- श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
  वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी एवं
  पाठ्यक्रम समन्वयक
  पर्फोगिंग आर्ट्स शिक्षा
  रा.मु.वि.शि. संस्थान, नोएडा

पाठ लेखक एवं गायक कलाकार

- प्रो. टी.वी. मणिकंदन
  प्रोफेसर
  कर्नाटक संगीत विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- निशा रवि एन
  कर्नाटक संगीत में रिसर्च
  स्कॉलर, गायक कलाकार,
  नई दिल्ली
- डा. (सुश्री) निशा रानी
  पर्फौमिंग आर्टिस्ट
  दिल्ली
- श्री जी एलान्कोवन
  ए ग्रेड आर्टिस्ट
  ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली
- श्रीमती ए. अक्षय
  रिसर्च स्कॉलर तथा कलाकार
  दिल्ली
- श्री आनन्द मोहन
  पर्फौमिंग आर्टिस्ट
  दिल्ली
- श्री एन. सी. शरण गणेश
  गायक, दिल्ली
- श्री एम. एस. सच्चिदानन्दन
  पर्फौमिंग आर्टिस्ट
  दिल्ली
- श्रीमती सुधा रघुरमन
  ए ग्रेड आर्टिस्ट
  ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली
- श्री आदर्श एम. नय्यर
  गायक कलाकार, दिल्ली

सहायक कलाकार

- श्री एन. पद्मनाथन
  मृदंगं वादक
  दिल्ली
- श्री वी. एस. के. अलदुरई
  वायलिन वादक
  दिल्ली
- श्री एम. एस. सच्चिदानन्दन
  वायलिन वादक
  दिल्ली

संपादक मंडल

- प्रो. उन्निकृष्णन
  संकाय अध्यक्ष
  इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
  खैरागढ़, छत्तीसगढ़
- प्रो. टी.वी. मणिकंदन
  प्रोफेसर
  कर्नाटक संगीत विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- विदूशि सरस्वती राजगोपालन
  सर्वोच्च ग्रेड वीणा वादक
  ऑल इंडिया रेडियो,
  दिल्ली
- प्रो. राधा व्यंकटचलन
  कर्नाटक संगीत में प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
  कर्नाटक संगीत विभाग, दिल्ली
  विश्वविद्यालय, दिल्ली

अनुवादक

- डॉ. त्रच्चा जैन,
  पूर्व सहायक प्रोफेसर
  भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डी.टी.पी. कार्य

शिवम् ग्राफिक्स, रानी बाग दिल्ली-110034

विषय-सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	संक्षित परिचय (सरली वरिसा, तग्गू स्थायी और स्थायी वरिसा)	1
2.	झंटा और धातु वरिसई	24
3.	अलंकारम्	46
4.	पिल्लरी गीत तथा संचारी गीत	52
5.	जाति स्वर और स्वर जति	58
6.	वर्ण	66
7.	कृति-कीर्तन	71
8.	दिव्यनाम कीर्तन तथा उत्सव संप्रदाय कीर्तन	78
9.	तरंग	84
10.	अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पुरंदर दास के पद	88
11.	भजन	94
	(i) पाठ्यक्रम	(i) - (v)

टिप्पणी

1

संक्षित परिचय

सरली वरिसा, तग्गू स्थायी और हेच्चू स्थायी वरिसा

कर्नाटक संगीत में कचि रखने के लिए प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए मुरंदर दास ने कतिपय, स्वरलहरी अभ्यास: तैयार किए हैं जो गायन में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के साथ-साथ वीणा, वॉयलिन, बांसुरी आदि वाद्य संगीत सीखने वालों के लिए भी उपयोगी है। आज भी इन्हीं अभ्यासों को विभिन्न संगीत विशेषज्ञों द्वारा उसी रूप में अपनाया गया। इससे इनके महत्त्व का आकलन किया जा सकता है। आमतौर पर इन का अभ्यास राग मयमालवा गोवला में किया जाता है जिसकी रचना स्वयं पुरंदर दास ने की थी। इसका अभ्यास स, रि, ग, म, प, ध, नि, स:- दोनों स्वरलहरियों में एक पैसा ही है। और जिसके कारण संगीत सीखने वाले नए-नए विद्यार्थियों को आसानी होती है।

राग मयमालवा गोवला में इनका गायन करना सबसे अच्छा है क्योंकि आमतौर पर विद्यार्थियों को प्रात: काल में गायन अभ्यास करने की सलाह दी जाती है और इस राग का गायन समय भी सुबह-सुबह का ही है।

कर्नाटक संगीत में गायन करने की स्वरस्थाना एक अलग प्रकार की स्वरलहरी है। ये है–शुद्ध ऋषभमु- चतुश्रुति ऋषभम, साधारण गांधरीम अंतरा गाधरिम, शुद्ध मध्यम् प्रति मध्यम, शुद्ध धैवतम् चतुश्रुति धैवतम्, कैषिकी निषाद्म और काकली निषादम्। इसमें षइज् और पंचम अचल स्वर भी हैं। विद्यार्थियों को गायन की प्रकृति के साथ-साथ, स्वर श्रवण की भी समझ होनी चाहिए।

अध्ययन-सामग्री में विर्मित अभ्यास और भजन-गान के माध्यम से विद्यार्थिकों मंद्र और तार स्वरों को समझ सकेंगे।

उद्देश्य:–

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् शिक्षा निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे:-

- गमक और ब्रिगा का गायन;
- लय के साथ प्रस्तुतिकरण;
- आवाज की रेंज में वृद्धि;
- मधुर आवाज में गायन करने की क्षमता।

1.1 सरली वरिसा

1.1.1 विलंबित गति

1)

x	1	2	3	x	v	x	v
स;	रि;	ग;	म;	प;	ध;	नि;	स;
x	1	2	3	x	v	x	v
स̇;	नि;	ध;	प;	म;	ग;	रि;	स;

II मध्य गति

x	1	2	3	x	v	x	v
स रि	ग म	प ध	नि स̇	स̇ नि	ध प	म ग	रि स

III द्रुत गति

x				I			
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स̇
2				3			
स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
x				v			
स	रि	ग	स	म	प	ध	स̇
x				v			
स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.2 I विलंबित गति

2)

x	1	2	3	x	v	x	v
स;	रि;	स;	रि;	स;	रि;	ग;	म;
x	1	2	3	x	v	x	v
स;	रि;	ग;	म;	प;	ध;	नि;	स;
x̣	1	2̣	3	x̣	v	x	v
स;	नि;	स;	नि;	स;	नि;	ध;	प;
x̣	1	2	3	x	v	x	v
स;	नि;	ध;	प;	म;	ग;	रि;	स;

II मध्य गति

x		1		2		3	
स	रि	स	रि	स	रि	ग	म

टिप्पणी

x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स

x		1		x		v	
सं	नि	स	नि	स	नि	ध	प

x		v		x		v	
स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III द्रुत गति

x				1				2				3			
स	रि	स	रि	स	रि	ग	म	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं

x				v				x				v			
सं	नि	स	नि	स	नि	ध	प	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.3 विलंबित गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	सऽ	रिऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	रिऽ	धऽ	निऽ	सऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सं̇ऽ	निऽ	धऽ	सं̇ऽ	तिऽ	धऽ	सं̇ऽ	निऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सं̇ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II मध्य गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	स	रि	ग	स	रि

x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं̇

x	1		2		3		
सं̇	नि	ध	सं̇	नि	ध	सं̇	नि

x		v		x		v	
सं̇	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

x				1				2				3			
सं̇	रि	ग	स	रि	ग	स	रि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं̇

x				v				x				v			
सं	नि	ध	सं	नि	ध	सं	नि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.4 I विलंबित गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	सऽ	रिऽ;	गऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	संऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	निऽ	धऽ	पऽ	सऽ	निऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II मध्य गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	स	रि	ग	म
x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	सं	नि	ध	प
x		v		x		v	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III द्रुत गति

x				1				2				3			
स	रि	ग	म	स	रि	ग	म	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x				v				x				v			
सं	नि	ध	प	सं	नि	ध	प	सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.5 विलंबित गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	ऽऽ	सऽ	रिऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	रिऽ	धऽ	निऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	;;	संऽ	निऽ

टिप्पणी

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	;	स	रि

x	r	v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं

x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	म	;	सं	नि

x		v		x		v	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

x				1			2				3			
स	रि	ग	म	प	,	स	रि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं

x				v			x				v			
सं	नि	ध	प	म	,	सं	नि	सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.6 I गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	सऽ	रिऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	संऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	संऽ	निऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सं़ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II मध्य गति

x		1		2		3	
स,	रि,	ग,	म,	प,	ध,	स,	रि,

x		v		x		v	
स,	रि,	ग,	म,	प,	ध,	नि,	सं,

x		1		2		3	
सं,	नि,	ध,	प,	म,	ग,	सं,	नि,

x		v			x		v	
स,	नि,	ध,	प,	ल,	म,	ग,	रि,	स,

III गति

x				1				2				3			
स	रि	ग	म	प	ध	स	रि	स	रि	स	म	प	ध	नि	सं
x				v				x				v			
सं	नि	ध	प	म	ग	सं	नि	सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.7 I गति

x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सस
x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	संऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II मध्य गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	;
x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	;
x		v			x		v
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

x				1		2				3			
स	रि	ग	म	प	ध	नि,	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x				v		x				v			
सं	नि	ध	प	म	ग	रि,	सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.8 विलंबित गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सं॒ऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॒ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॒ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II मध्य गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	म	ग	रि
x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं॒
x		1		2		3	
सं॒	नि	ध	प	म	प	ध	नि
x		v		x		v	
सं॒	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

x				1				2				3			
स	रि	ग	म	प	म	ग	रि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं॒
x				v				x				v			
सं॒	नि	ध	प	म	प	ध	नि	सं॒	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.9 I गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सं॒ऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॒ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	गऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॒ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	म	ध	प
x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	म	प	ग	म
x		v		x		v	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.10 I गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सं̇ऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं̇ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं̇ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	रि	ग	म	प
x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	नि	ध	प	म
x		v		x		v	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

x				1				2				3			
स	रि	ग	म	रि	ग	म	प	स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x				v				x				v			
सं	नि	ध	प	नि	ध	प	म	सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.1.11 I गति

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	;;	गऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
पऽ	;;	पऽ	;;	पऽ	;;	पऽ	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं̇ऽ	;;	निऽ	धऽ	निऽ	;;	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	;;	पऽ	मऽ	पऽ	;;	पऽ	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सं̇ऽ	सं̇ऽ	निऽ	धऽ	निऽ	निऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	;;	पऽ	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	रिऽ	मऽ	;;	गऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
पऽ	मऽ	पऽ	;;	धऽ	पऽ	धऽ	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	धऽ	निऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	;	पऽ	;

x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	धऽ	पऽ	;	मऽ	मऽ	पऽ	;

x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	निऽ	सं॑ऽ	;	सं॑ऽ	निऽ	धऽ	पऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सं॑ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

II मध्य गति

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	;	ग	म

x		v		x		v	
प	;	प	;	प	;	प	;

x		1		2		3	
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म

x		v		x		v	
ग	म	प	ग	म	ग	रि	स

x		1		2		3	
सं॑	;	नि	ध	नि	;	ध	प

x		v		x		v	
ध	;	प	म	प	;	प	;

x		1		2		3	
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म

x		v		x		v	
ग	म	प	ग	म	ग	रि	स

x		1		2		3	
सं॑	सं॑	नि	ध	नि	नि	ध	प

x		v		x		v	
ध	ध	प	म	प	;	प	;

x		1		2		3	
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म

x		v		x		v	
ग	म	प	ग	म	ग	रि	स

टिप्पणी

x		1		2		3	
स	रि	ग	रि	ग	;	ग	म
x		v		x		v	
प	म	प	;	ध	प	ध	;
x		1		2		3	
म	प	ध	प	ध	नि	ध	प
x		v		x		v	
म	प	ध	प	म	ग	रि	स
x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	;	प	;
x		v		x		v	
ध	ध	;	म	म	प	;	;
x		1		2		3	
ध	नि	सं	;	सं	नि	ध	प
x		v		x		v	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

x				1				2				3			
स	रि	ग	म	प	,	ग	म	प	,	,	,	प	,	,	,
x				v				x				v			
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म	ग	म	प	ग	म	ग	रि	स
x				1				2				3			
सं	,	नि	ध	नि	,	ध	प	ध	,	प	म	प	,	प	,
x				v				x				v			
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म	ग	म	प	ग	म	ग	रि	स
x				1				2				3			
सं	सं	नि	ध	नि	नि	ध	प	ध	ध	प	म	प	,	प	,
x				v				x				v			
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म	ग	म	प	ग	म	ग	रि	स
x				1				2				3			
स	रि	ग	रि	ग	,	ग	म	प	म	प	,	ध	प	ध	,
x				v				x				v			
म	प	ध	प	ध	नि	ध	प	म	प	ध	प	म	ग	रि	स

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	,	प	,
ध	ध	प	,	म	म	प	,

x		v		x		v	
ध	नि	सं	,	सं	नि	ध	प
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

1.2 हेच्चू स्थायी (थारास्थाभी वरिसा)

I विलंबित गति

1)

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	;;	;;	;;	सऽ	;;	;;	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	सऽ	निऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

2)

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	;;	;;	;;	सऽ	;;	;;	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	सऽ	सऽ	रिऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	सऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	सऽ	निऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

3)

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सऽ
x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	;;	;;	;;	सऽ	;;	;;	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
धऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	रिऽ	सऽ	रिऽ

टिप्पणी

x	1	2	3	x	v	x	v
संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ
धऽ	निऽ	संऽ	रिऽ	संऽ	संऽ	रिऽ	संऽ
संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ
धऽ	निऽ	संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

4)

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	संऽ
संऽ	;;	;;	;;	संऽ	;;	संऽ	;;
धऽ	निऽ	संऽ	रिऽ	गंऽ	मंऽ	गंऽ	रिऽ
संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ
धऽ	निऽ	संऽ	रिऽ	गंऽ	रिऽ	सं	रिऽ
संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ
धऽ	निऽ	संऽ	रिऽ	संऽ	संऽ	रिऽ	संऽ
संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ
धऽ	निऽ	संऽ	रिऽ	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ
संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

5)

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	संऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सं॰	;;	;;	;;	स॰	;;	;;	;;
x	1	2	3	x	v	x	v
ध॰	नि॰	सं॰	रिं॰	ग॰	मं॰	पं॰	मं॰
x	1	2	3	x	v	x	v
ग॰	रि॰	सं॰	नि॰	ध॰	प॰	म॰	प॰
x	1	2	3	x	v	x	v
ध॰	नि॰	सं॰	रिं॰	ग॰	मं॰	ग॰	रिं॰
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॰	रिं॰	सं॰	नि॰	ध॰	प॰	म॰	प॰
x	1	2	3	x	v	x	v
ध॰	नि॰	सं॰	रिं॰	ग॰	रिं॰	सं॰	रिं॰
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॰	रिं॰	सं॰	नि॰	ध॰	प॰	म॰	प॰
x	1	2	3	x	v	x	v
ध॰	नि॰	सं॰	रिं॰	सं॰	सं॰	रिं॰	सं॰
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॰	रिं॰	सं॰	नि॰	ध॰	प॰	म॰	प॰
x	1	2	3	x	v	x	v
ध॰	नि॰	सं॰	रिं॰	सं॰	नि॰	ध॰	प॰
x	1	2	3	x	v	x	v
सं॰	नि॰	ध॰	प॰	म॰	ग॰	रि॰	स॰

II गति

1)

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं॰
x		v		x		v	
सं॰	;	;	;	सं॰	;	;	;
x		1		2		3	
ध॰	निं॰	सं॰	रिं॰	सं॰	नि॰	ध॰	पी॰
x		v		x		v	
सं॰	नि॰	ध॰	प॰	म॰	ग॰	रि॰	स॰

टिप्पणी

2)

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		v		x		v	
सऽ	;	;	;	सऽ	;	;	;
x		1		2		3	
ध	नि	सं	रिं	सं	सं	रिं	सं
x		v			x		v
सं	रिं	सं	निं	ध	प	म	प
x		1		2		3	
ध	नि	सं	रिं	सं	नि	ध	प
x		v		x		v	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स

3)

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		v		x		v	
सं	;	;	;	स	;	;	;
x		1		2		3	
ध	नि	सं	रिं	गं	रिं	सं	रिं
x		v		x		v	
सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
x		1		2		3	
ध	नि	सं	रिं	सं	सं	रिं	सं
x		v		x		v	
सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
x		1		2		3	
ध	नि	सं	रिं	सं	नि	ध	प
x		v			x		v
स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

4)

x		1		2		3	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं
x		v		x		v	
सं	;	;	;	सं	;	;	;

	x		1		2		3	
	ध	नि	सं	रिं	गं	मं	गं	रिं
	x		v		x		v	
	सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
	x		1		2		3	
	ध	नि	सं	रिं	गं	रिं	सं	रिं
	x		v		x		v	
	सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
	x		1		2		3	
	ध	नि	सं	रिं	सं	स	रि	स
	x		v		x		v	
	सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
	x		1		2		3	
	ध	नि	सं	रिं	सं	नि	ध	प
	x		v		x		v	
	सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स
5)	x		1		2		3	
	सि	रि	ग	म	प	ध	नि	स
	x		v		x		v	
	सं	;	;	;	स	;	;	;
	x		1		2		3	
	ध	नि	सं	रिं	गं	मं	पं	मं
	x		v		x		v	
	गं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
	x		1		2		3	
	ध	नि	यं	रिं	गं	मं	गं	रिं
	x		v		x		v	
	सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प
	x		1		2		3	
	ध	नि	सं	रिं	गं	रिं	सं	रिं
	x		v		x		v	
	सं	रिं	सं	नि	ध	प	म	प

x		1		2		3	
ध	नि	स	रि	स	स	रि	स
X		V		X		V	
स	रि	स	नि	ध	प	म	प
X		1		2		3	
ध	नि	स	रि	स	नि	ध	प
X		V		X		V	
स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

III गति

1.	x	1	2	3
	सरिगम	पधनिस	संऽ	संऽ
	x	v	x	v
	धनिसंर	संनिधय	संनिधय	मगरिस
2.	x	1	2	3
	सरिगम	पधनिस	संऽ	संऽ
	x	v	x	v
	धनिसरि	ससरिस	सरिसनि	धपमव
	x	1	2	3
	धनिसरि	संनिधय	संनिधय	मगरिस
3.	x	v	x	v
	सरिगम	पधनिस	संऽ	संऽ
	x	1	2	3
	धनिसरि	गरिसरि	सरिसनि	धपमप
	x	v	x	v
	धनिसर	ससरिस	सरिसनि	धपमप
	x	1	2	2
	धनिसरि	संनिधप	संनिधप	मगरिस
4.	x	v	x	v
	सरिगम	पधनिस	संऽ	संऽ
	x	1	2	3
	धनिसरि	गमगरि	सरिसनि	धपमप
	x	v	x	v
	धनिसर	गरिसरि	सरिसनि	धपमप

x	1	2	3
धनिसरि	ससरिस	सरिसनि	धपमप
x	v	x	v
धनिसंर	संनिधप	संनिधप	मगरिस

5.

x	1	2	3
सरिगम	पधनिस	सं ऽ	सं ऽ
x	v	x	v
धनिसरि	गमपम	गरिसनि	धपमप
x	1	2	3
धनिसर	गमगरि	सरिसनि	धपमप
x	v	x	v
धनिसरि	गरिसरि	सरिसनि	धपमप
x	1	2	3
धनिसरि	ससरिस	सरिसनि	धपमप
x	v	x	v
धनिसरि	संनिधप	संनिधप	मगरिस

1.3 तग्गू स्थायी (मन्द्रस्थायी वरिसा)

I गति

1.

x	1	2	3	x	v	x	v
सं ऽ	नि ऽ	ध ऽ	प ऽ	म ऽ	ग ऽ	रि ऽ	स ऽ
X	1	2	3	X	V	X	V
स ऽ	; ;	; ;	; ;	स ऽ	; ;	; ;	; ;
X	1	2	3	X	V	X	V
ग ऽ	रि ऽ	स ऽ	नि ऽ	स ऽ	रि ऽ	ग ऽ	म ऽ
X	1	2	3	X	V	X	V
स ऽ	रि ऽ	ग ऽ	म ऽ	प ऽ	ध ऽ	नि ऽ	स ऽ

2.

X	1	2	3	X	V	X	V
सं ऽ	नि ऽ	ध ऽ	प ऽ	म ऽ	ग ऽ	रि ऽ	स ऽ
X	1	2	3	X	V	X	V
स ऽ	; ;	; ;	; ;	स ऽ	; ;	; ;	; ;
X	1	2	3	X	V	X	V
ग ऽ	रि ऽ	स ऽ	न ऽ	स ऽ	स ऽ	नि ऽ	स ऽ

	x	1	2	3	x	v	x	v
	सऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	गऽ	रिऽ	सऽ	ऩिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ
	x	1	2	3	x	v	x	y
	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सऽ
3.	x	1	2	3	x	v	x	v
	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मंऽ	गंऽ	रिऽ	संऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	सऽ	; ;	; ;	; ;	सऽ	; ;	; ;	; ;
	x	1	2	3	x	v	x	v
	गऽ	रिऽ	सऽ	ऩिऽ	धऽ	ऩिऽ	सऽ	निऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	सऽ	ऩिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	गऽ	रिऽ	सऽ	ऩिऽ	सऽ	सऽ	ऩिऽ	सऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	सऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	गऽ	रिऽ	सऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ
	x	1	2	3	x	v	x	y
	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	ऩिऽ	सऽ
4.	x	1	2	3	x	v	x	v
	संऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	सऽ	; ;	; ;	; ;	सऽ	; ;	; ;	; ;
	x	1	2	3	x	v	x	v
	गऽ	रिऽ	सऽ	ऩिऽ	ध़ऽ	प़ऽ	ध़ऽ	ऩिऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	सऽ	ऩिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ
	x	1	2	3	x	v	x	v
	गऽ	रिऽ	सऽ	ऩिऽ	ध़ऽ	ऩिऽ	सऽ	ऩिऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	रिऽ	सऽ	निऽ	सऽ	सऽ	निऽ	सऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
सऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ

x	1	2	3	x	v	x	v
गऽ	रिऽ	सऽ	निऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ

x	1	2	3	x	v	x	ṿ
सऽ	रिऽ	सऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सऽ

II गति

1)

x̣		1		2		3	
स	नि	ध	प	म	ग	रि	स

x		v		x		v	
स	; ;	; ;		सऽ		; ;	

x		1		2		3	
ग	रि	स	नि̣	स	रि	ग	म

x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	ṡ

2)

x		1		2		3	
स̇	नि	ध	प	म	ग	रि	स

x		v		x		v	
सऽ	; ;	ल		सऽ		; ;	

x		1		2		3	
ग	रि	स	नि̣	स	स	नि̣	स

x		v		x		v	
स	नि̣	स	रि	ग	म	प	म

x		1		2		3	
स	रि	स	नि	स	रि	ग	म

x		v			x		v
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं

3)

x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स
x		v		x	v		
स	;	;	ल	सऽ	; ;		
x		1		2		3	
ग	रि	स	नि़	ध़	नि़	स	नि़
x		v		x		v	
स	नि़	स	रि	ग	म	प	म
x		1		2		3	
ग	रि	स	नि़	स	स	नि़	स
x		v			x		v
स	नि़	स	रि	ग	म	प	म
x		1		2		3	
ग	रि	स	नि	स	रि	ग	म
x		v		x		v	
स	रि	ग	म	प	ध	नि	सं

4.

x		1		2		3	
सं	नि	ध	प	म	ग	रि	स
x		v			x	v	
स	;	;	;		सऽ	; ;	
x		1		2		3	
ग	रि	स	नि़	ध़	प़	ध़	नि़
x		v		x		v	
स	नि़	स	रि	ग	म	प	म
x		1		2		3	
ग	रि	स	नि़	ध़	नि़	स़	नि़
x		v		x		v	
स	नि़	स	रि	ग	म	प	म
x		1		2		3	
ग	रि	स	नि़	स	स	नि़	स

x	v	x	v
स नि़	स रि	ग म	प म

x	1	2	3
ग रि	स नि़	स रि	ग म

x	v	x	v
स रि	ग म	प ध	नि सं

III द्रुत गति

1.

x	1	2	3
संनिधप	मगरिस	सऽ	सऽ

x	v	x	v
गरिसनि़	सरिगम	सरिगम	पधनिसं

2.

x	1	2	3
संनिधप	मगरिस	सऽ	सऽ

x	v	x	v
गरिसरनि़	ससनि़स	सनि़सरि	गमपम

x	1	2	3
गरिसनि़	सरिगम	सऱिगम	पधनिस

3.

x̣	v	x̣	v
सनिधप	मगरिस	सऽ	सऽ

x	1	2	3
गरिसनि़	ध़नि़स़नि़	सनि़सरि	गमपम

x	v	x	v
गरिसनि़	ससनि़स	सनि़सरि	गमपम

x	1	2	3
मरिसनि	सरिगम	सरिगम	पधनिसं

4.

x	v	x	v
संनिधप	मगरिस	सऽ	सऽ

टिप्पणी

x गरिसनि़	1 धपधनि	2 सऩसरि	3 गमपम
x गरिसनि़	v धनि़सनि़	x सनि़सरि	v गमपम
x गरिसनि़	1 ससनि़	2 ससनि़सरि	3 गमपम
x गरिसनि़	v सरिगम	x सरि़गम	v पधनिसं

(ताल चक्र पूरा करने के लिए उक्त की पुनरावृत्ति करें।)

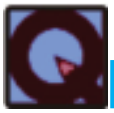

पाठगत प्रश्न

1. उस राग का नाम बताए जिसमें प्रारंभिक अभ्यास करना है?
2. आरंभिक अभ्यास निर्माता का नाम बताएं।
3. तार सप्तक में गाई जाने वाली वरिसई को लिखें।

प्रस्तावित अभ्यास

1. संकराभरणम, कल्याणी आदि राग में उक्त वरिसई का अभ्यास करें।
2. स्वर अर्थात् अ, इ, उ, ए, ओ, अं- आदि को उच्चारण करते हुए उक्त सभी अभ्यास करें।

2

झंटा और धातु वरिसई

झंटा स्वर वरिसई स्वर-गायन का ऐसा अभ्यास है जिसमें एक ही स्वर को दो बार गाया जाता है परन्तु स्वर का दूसरी बार गायन करते समय या वादन करते समय अधिक जोर देकर गाते/बजाते हैं। झंटा स्वर वरिसई के 10 अभ्यास हैं जिन्हें क्रमशः चार अलग-अलग गति (speed) में गाया/बजाया जाता है। सरली वरिसई या अन्य सरल अभ्यास करने के पश्चात् ही झंटा और धातु वरिसई को सीखा जाता है।

धातु वरिसई गायन में स्वरों का गायन स्वरावलि क्रम के अनुसार न करके जिग जैग रूप से (सऽ पऽ गऽ सऽ) किया जाता है। धातु स्वर वरिसई के अनेक रूप प्रचलित हैं परन्तु हम यहाँ दो प्रमुख वरिसई का ही अभ्यास करेंगे। धातु वरिसई को संस्कृत में वक्र वरिसई भी कहते हैं। विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि वे Nios द्वारा दी गई CD (क्षव्य) को अवश्य सुनें।

उद्देश्यः-

इस पाठ का अभ्यास करने के उपरांत विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम हो सकेंगेः-

- स्वरावलियों का वर्णन कर पाएंगे।
- आवाज का बेहतर तरीके से उतार-चढ़ाव कर सकेंगे साथ ही अंगुली-संचालन बेहतर तरीके से करने में समक्ष होंगे।
- तीव्र गति से स्पष्ट एवं सुरीले तरीके से स्वर-गायन कर जाएंगे।
- भविष्य में वक्र-रागों की कठिन स्वरावलियों का अभ्यास करने में सक्षम होंगे।

2.1 झंटा वरिसई

1. प्रथम गति (Ist speed) (विलबिंत)

1)	x		1		2		3		x		v		x		v	
	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध	नी	नी	सं	सं
	x		1		2		3		x		v		x		v	
	सं	सं	नि	नि	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

द्वितीय गति (II speed) (मध्य)

x		1		2		3	
सस	रिरि	गग	मम	पप	धध	निनि	संसं

x		v		x		v	
संसं	निनि	धध	पप	मम	गग	रिरि	सस

तृतीय गति (III speed) (द्रुत)

x	1	2	3
सस रिरि गग मम	पप धध निनि संसं	संसं निनि धध पप	मम गग रिरि सस

x	v	x	v
सस रिरि गग मम	पप धध निनि संसं	संसं निनि धध पप	मम गग रिरि सस

2.1.1 प्रथम गति (विलंबित)

2)

x	1	2	3	x	v	x	v
स स	रि रि	ग ग	म म	रि रि	ग ग	म म	प प

x	1	2	3	x	v	x	v
ग ग	म म	प प	ध ध	म म	प प	ध ध	नि नि

x	1	2	3	x	v	x	v
प प	ध ध	नि नि	सं सं	सं सं	नि नि	ध ध	प प

x	1	2	3	x	v	x	v
नि नि	ध ध	प प	म म	ध ध	प प	म म	ग ग

x	1	2	3	x	v	x	v
प प	म म	ग ग	रि रि	म म	ग ग	रि रि	स स

2) द्वितीय गति (मध्य)

x		1		2		3	
सस	रिरि	गग	मम	रिरि	गग	मम	पप

x		v		x		v	
गग	मम	पप	धध	मम	पप	धध	निनि

x		1		2		3	
पप	धध	निनि	संसं	संसं	निनि	धध	पप

x		v		x		v	
निनि	धध	पप	मम	धध	पप	मम	गग

x		1		2		3	
पप	मम	गग	रिरि	मम	गग	रिरि	सस

टिप्पणी

x		v		x		v	
सस	रिरि	गग	मम	रिरि	गग	मम	पप
x		1		2		3	
गग	मम	पप	धध	मम	पप	धध	निनि
x		v		x		v	
पप	धध	निनि	संसं	संसं	निनि	धध	पप
x		1		2		3	
निनि	धध	पप	मम	धध	पप	मम	गग
x		v		x		v	
पप	मम	गग	रिरि	मम	गग	गिरि	सस

III द्रुत

x	1	2	3
सस रिरि गग मम	रिरि गग मम पप	गग मम पप धध	मम पप धध निनि
x	v	x	v
पप धध निनि संसं	संसं निनि धध पप	मम धध पप मम	धध पप मम गग
x	1	2	3
पप मम गग रिरि	मम गग रिरि सस	सस रिरि गग मम	रिरि गग मम पप
x	v	x	v
गग मम पप धध	मम पप धध निनि	पप धध निनि संसं	संसं निनि धध पप
x	1	2	3
निनि धध पप मम	धध पप मम गग	पप मम गग रिरि	मम गग रिरि सस
x	v	x	v
सस रिरि गग मम	रिरि गग मम पप	गग मम पप धध	मम पप धध निनि
x	1	2	3
पप धध निनि संस	संस निनि धध पप	निनि धध पप मम	धध पप मम गग
x	v	x	v
पप मम गग रिरि	मम गग रिरि सस	सस रिरि गग मम	रिरि गग मम पप
x	1	2	3
गग मम पप धध	मम पप धध निनि	पप धध निनि संसं	संसं निनि धध पप
x	v	x	v
निनि धध पप मम	धध पप मम गग	पप मम गग गिगि	मम गग गिरि सस

टिप्पणी

2.1.3 विलंबित

x		1		2		3		x		v		x		v	
स	स	रि	रि	ग	ग	रि	रि	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
रि	रि	ग	ग	म	म	ग	ग	रि	रि	ग	ग	म	म	पी	पी
x		1		2		3		x		v		x		v	
ग	ग	म	म	प	प	म	म	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	प	प	ध	ध	प	प	म	म	प	प	ध	ध	नी	नी
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	ध	ध	न	न	ध	ध	प	प	ध	ध	नी	नी	सं	सं
x		1		2		3		x		v		x		v	
सं	सं	नी	नी	ध	ध	नी	नी	सं	सं	नी	नी	ध	ध	प	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
नी	नी	ध	ध	प	प	ध	ध	नी	नी	ध	ध	प	प	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
ध	ध	प	प	म	म	प	प	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	म	म	ग	ग	म	म	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	ग	ग	रि	रि	ग	ग	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

II मध्य गति

x		1		2		3	
सस	रिरि	गग	रिरि	सस	रिरि	गग	मम
x		v		x		v	
रिरि	गग	मम	गग	रिरि	गग	मम	पप
x		1		2		3	
गग	मम	पप	मम	गग	मम	पप	धध
x		v		v		v	
मम	पप	धध	पप	मम	पप	धध	नीनी
x		1		2		3	
पप	धध	नीनी	धध	पप	धध	नीनी	संसं

x		v		x		v	
संसं	नीनी	धध	नीनी	संसं	नीनी	धध	पप
x		1		2		3	
नीनी	धध	पप	धध	नीनी	धध	पप	मम
x		v		x		v	
धध	पप	मम	पप	धध	पप	मम	गग
x		1		2		3	
पप	मम	गग	मम	पप	मम	गग	रिरि
x		v		x		v	
मम	गग	रिरि	गग	मम	गग	रिरि	सस

III द्रुत गति

x				1				2				3			
सस	रिरि	गग	रिरि	सस	रिरि	गग	मम	रिरि	गग	मम	गग	रिरि	गग	मम	पप
x				v				x				v			
गग	मम	पप	मम	गग	मम	पप	धध	मम	पप	धध	पप	मम	पप	धध	नीनी
x				1		2				3					
पप	धध	नीनी	धध	पप	धध	नीनी	संसं	संसं	नीनी	धध	नीनी	संसं	नीनी	धध	पप
x				v		x		x				v			
नीनी	धध	पप	धध	नीनी	धध	पप	मम	धध	पप	मम	पप	धध	पप	मम	गग
x				1				2				3			
पप	मम	गग	मम	पप	मम	गग	रिरि	मम	गग	रिरि	गग	मम	गग	रिरि	सस

(ताल चक्र पूरा करने के लिए उक्त की पुनरावृति करें।)

2.1.4 विलंबित गति

x	1	2		3	x	v	x	v
सऽ	स	रिऽ	रि	ग ग	स स	रि रि	ग ग	म म
x	1	2		3	x	v	x	v
रिऽ	रि	गऽ	ग	म न	रि रि	ग ग	म म	प प
x	1	2		3	x	v	x	v
गऽ	ग	मऽ	म	प प	ग ग	म म	प प	ध ध
x	1	2		3	x	v	x	v
मऽ	म	पऽ	प	ध ध	म म	प प	ध ध	नी नी
x	1	2		3	x	v	x	v
पऽ	प	धऽ	ध	नी नी	ध ध	ध ध	नी नी	सं सं

टिप्पणी

|| x 1 2 3 | x v | x v ||
|| सऽ स निऽ नि | ध ध | सं सं नि नि | ध ध प प ||

|| x 1 2 3 | x v | x v ||
|| निऽ नि धऽ ध | प प | नि नि ध ध | प प म म ||

|| x 1 2 3 | x v | x v ||
|| धऽ ध पऽ प | म म | ध ध प प | म म ग ग ||

|| x 1 2 3 | x v | x v ||
|| पऽ प मऽ म | ग ग | प प म म | ग ग रि रि ||

|| x 1 2 3 | x v | x v ||
|| मऽ म गऽ ग | रि रि | म म ग ग | रि रि स स ||

II मध्य गति

|| x 1 2 3 |
|| स स रि रि ग ग | स स रि रि ग ग म म |

| x v | x v ||
| रि रि ग ग म म | रि रि ग ग म म प प ||

|| x 1 2 3 |
|| ग ग म म प प | ग ग म म प प ध ध |

| x v | x v ||
| म म प प ध ध | म म प प ध ध नी नी ||

|| x 1 2 3 |
|| प प ध ध नी नी | प प ध ध नी नी स स |

| x v | x v ||
| सं सं नी नि ध ध | स स नी नी ध ध | प प ||

|| x 1 2 3 |
|| नी नी ध ध प प | नी नी ध ध प प म म |

| x v | x v ||
| ध ध प प म म | ध ध प प म म ग ग ||

|| x 1 2 3 |
|| प प म म ग ग | प प म म ग ग रि रि |

| x v | x v ||
| म म ग ग रि रि | म म ग ग रि रि स स ||

III द्रुत गति

x	1	2	3
स स रि रि ग ग	सस रिरि गग मम	रि रि ग ग मम	रिरि गग मम पप
x	**v**	**x**	**v**
ग ग म प पप	गग मम पप धध	म म प प ध ध	मम पप धध नीनी
x	**1**	**2**	**3**
प प ध नीनी	पप धध नीनी स̇स̇	स̇, स̇नी, नी धध	स̇स̇ नीनी धध पप
x	**v**	**x**	**v**
नी नीध ध पप	नीनी धध पप मम	ध, ध प, प मम	धध पप मम गग
x	**1**	**2**	**3**
प प म म गग	पप मम गग रिरि	म म ग ग रिरि	मम गग रिरि सस

(ताल चक्र पूरा करने के लिए उक्त की पुनरावृति करें।)

2.1.5 विलंबित

x		1	2			3		x		v		x		v	
स	स	ऽ	रि	रि	ऽ	ग	ग	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म
x		1	2			3		x		v		x		v	
रि	रि	ऽ	ग	ग	ऽ	म	म	रि	रि	ग	ग	म	म	प	प
x		1	2			3		x		v		x		v	
ग	ग	ऽ	म	म	ऽ	प	प	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध
x		1	2			3		x		v		x		v	
म	म	ऽ	प	प	ऽ	ध	ध	म	म	प	प	ध	ध	नी	नी
x		1	2			3		x		v		x		v	
प	प	ऽ	ध	ध	ऽ	नी	नी	प	प	ध	ध	नी	नी	स̇	स̇
x		1	2			3		x		v		x		v	
स̇	स̇	ऽ	नी	नी	ऽ	ध	ध	स̇	स̇	नी	नी	ध	ध	प	प
x		1	2			3		x		v		x		v	
नी	नी	ऽ	ध	ध	ऽ	प	प	नी	नी	ध	ध	प	प	म	म
x		1	2			3		x		v		x		v	
ध	ध	ऽ	प	प	ऽ	म	म	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग
x		1	2			3		x		v		x		v	
प	प	ऽ	म	म	ऽ	ग	ग	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि
x		1	2			3		x		v		x		v	
म	म	ऽ	ग	ग	ऽ	रि	रि	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

II मध्य गति

‖ x	1		2		3		
‖ सस	रिरि	गग	सस	रिरि	गग	मम	|
| x	v		| x		v		
| रिरि	गग	मम	| रिरि	गग	मम	पप	‖
‖ x	1		2		3		
‖ गग	मम	पप	गग	मम	पप	धध	|
| x	v		| x		v		
| मम	पप	धध	| मम	पप	धध	निनि	‖
‖ x	1		2		3		
‖ पप	धध	निनि	पप	धध	निनि	संसं	|
| x	v		| x		v		
| ससं	निनि	धध	| संसं	निनि	धध	पप	‖
‖ x	1		2		3		
‖ निनि	धध	पप	निनि	धध	पप	मम	|
| x	v		| x		v		
| धध	पप	मम	| धध	पप	मम	गग	‖
‖ x	1		2		3		
‖ पप	मम	गग	पप	मम	गग	रिरि	|
| x	v		| x		v		
| मम	गग	रिरि	| मम	गग	रिरि	सस	‖

III द्रुत गति

‖ x	1	2	3	
‖ सस रिरि गग	सस रिरि गग मम	रिरि गग मम	रिरि गग मम पप	|
| x	v	| x	v	
| गग मम पप	गग मम पप धध	| मम पप धध	मम पप धध निनि	‖
‖ x	1	2	3	
‖ पप धध निनि	पप धध निनि संसं	संस निनि धध	संसं निनि धध पप	|
| x	v	| x	v	
| निनि धध पप	निनि धध पप मम	| धध पप मम	धध पप मम गग	‖
‖ x	1	2	3	
‖ पप मम गग	पप मम गग रिरि	मम गग रिरि	मम गग रिरि सस	|

(ताल चक्र पूरा करने के लिए उक्त की पुनरावृत्ति करें।)

2.1.6 विलबिंत गति

x		1		2		3		x		v		x		v	
स	स	स	रि	रि	रि	ग	ग	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
रि	रि	रि	ग	ग	ग	म	म	रि	रि	ग	ग	म	म	प	प
x		1		2		3		x		v		x	v		
ग	ग	ग	म	म	म	प	प	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	म	प	प	प	ध	ध	म	म	प	प	ध	ध	नि	नि
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	प	ध	ध	ध	नि	नि	प	प	ध	ध	नि	नि	सं	सं
x		1		2		3		x		v		x		v	
सं	सं	सं	नि	नि	नि	ध	ध	सं	सं	नि	नि	ध	ध	प	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
नि	नि	नि	ध	ध	ध	प	प	नि	नि	ध	ध	प	प	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
ध	ध	ध	प	प	प	म	म	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	प	म	म	म	ग	ग	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	म	ग	ग	ग	रि	रि	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

II मध्य गति

x	1		2		3	
ससस	रिरिरि	गग	सस	रिरि	गग	मम
x	v		x		v	
रिरिरि	गगग	मम	रिरि	गग	मम	पप
x	1		2		3	
गगग	ममम	पप	गग	मम	पप	धध
x	v		x		v	
ममम	पपप	धध	मम	पप	धध	निनि
x	1		2		3	
पपप	धधध	निनि	पप	धध	निनि	सस

x	v		x		v	
संसंसं	निनिनि	धध	संसं	निनि	धध	पप
x	1		2		3	
निनिनि	धधध	पप	निनि	धध	पप	मम
x	v		x		v	
धधध	पपप	मम	धध	पप	मम	गग
x	1		2		3	
पपप	ममम	गग	पप	मम	गग	रिरि
x	v		x		v	
ममम	गगग	रिरि	मम	गग	रिरि	सस

III द्रुत गति

x	1	2	3
ससस रिरिरि गगग	सस रिरि गग मम	रिरिरि गगग मम	रिरि गग मम पप
x	v	x	v
गगग ममम पप	गग मम पप धध	ममम पपप धध	मम पप धध निनि
x	1	2	3
पपप धधध निनि	पप धध निनि संसं	संसंसं निनिनि धध	संसं निनि धध पप
x	v	x	v
निनिनि धधध पप	निनि धध पप मम	धधध पपप मम	धध पप मम गग
x	1	2	3
पपप ममम गग	पप मम गग रिरि	ममम गगग रिरि	मम गग रिरि सस

(ताल चक्र पूरा करने के लिए उक्त की पुनरावृत्ति करें)

2.1.7 विलंबित गति

x		1		2		3			x		v			x	v
स	स	रि	स	स	रि	स	रि	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म
x		1		2		3		x		v			x		v
रि	रि	ग	रि	रि	ग	रि	ग	रि	रि	ग	ग	म	म	प	प
x		1		2		3		x		v			x		v
ग	ग	म	ग	ग	म	ग	म	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध
x		1		2		3		x		v			x		v
म	म	प	म	म	प	म	प	म	म	प	प	ध	ध	नि	नि

x		1		2		3		x		v			x		v
प	प	ध	प	प	ध	प	ध	प	प	ध	ध	नि	नि	सं	सं
x		1		2		3		x		v			x		v
सं	सं	नि	सं	सं	नि	स	नि	सं	सं	नि	नि	ध	ध	प	प
x		1		2		3		x		v			x		v
नि	नि	ध	नि	नि	ध	नि	ध	नि	नि	ध	ध	प	प	म	म
x		1		2		3		x		v			x		v
ध	ध	प	ध	ध	प	ध	प	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग
x		1		2		3		x		v			x		v
प	प	म	प	प	म	प	म	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि
x		1		2		3		x		v			x		v
म	म	ग	म	म	ग	म	ग	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

II मध्य गति

x	1		2		3	
ससरि	ससरि	सरि	सस	रिरि	गग	मम
x	v		x		v	
रिरिग	रिरिग	रिग	रिरि	गग	मम	पप
x	1		2		3	
गगम	गगम	गम	गग	मम	पप	धध
x	v		x		v	
ममप	ममप	मप	मम	पप	धध	निनि
x	1		2		3	
पपध	पपध	पध	पप	धध	निनि	सस
x	v		x		v	
सं सं नि	सं सं नि	सनि	सं सं	निनि	धध	पप
x	1		2		3	
निनिध	निनिध	निध	निनि	धध	पप	मम
x	v		x		v	
धधप	धधप	धप	धध	पप	मम	गग
x	1		2		3	
पपप	पपम	पम	पप	मम	गग	रिरि
x	v		x		v	
ममग	ममग	मग	मम	गग	रिरि	सस

टिप्पणी

III द्रुत गति

x	1	2	3
ससरि ससरि सरि	सस रिरि गग मम	रिरिग रिरिग रिग	रिरि गग मम पप
x	v	x	v
गगम गगम गम	गग मम पप धध	ममप ममप मप	मम पप धध निनि
x	1	2	3
पपध पपध पध	पप धध निनि संसं	संसंनि संसंनि संनि	संसं निनि धध पप
x	v	x	v
निनिध निनिध निध	निनि धध पप मम	धधप धधप धप	धध पप मम गग
x	1	2	3
पपम पपम पम	पप मम गग रिरि	ममग मग मग	मम गग रिरि सस

(उक्त की पुनरावृत्ति करें)

2.1.8 विलंबित गति

x		1		2		3		x		v		x		v	
स	स	रि	रि	ग	स	रि	ग	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
रि	रि	ग	ग	म	रि	ग	म	रि	रि	ग	ग	म	म	प	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
ग	ग	म	म	प	ग	म	प	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	प	प	ध	म	प	ध	म	म	प	प	ध	ध	नि	नि
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	ध	ध	नि	प	ध	नि	प	प	ध	ध	नि	नि	सं	सं
x		1		2		3		x		v		x		v	
स	स	नि	नि	ध	सं	नि	ध	सं	सं	नि	नि	ध	ध	प	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
नि	नि	ध	ध	प	नि	ध	प	नि	नि	ध	ध	प	प	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
ध	ध	प	प	म	ध	प	म	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	म	म	ग	प	म	ग	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	ग	ग	रि	म	ग	रि	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

II मध्य गति

x		1		2		3		
सस	रिरि	ग	सरिग	सस	रिरि	गग	मम	
x		v		x		v		
रिरि	गग	म	गरिम	रिरि	गग	मम	पप	
x		1		2		3		
गग	मम	प	गमप	गग	मम	पप	धध	
x		v		x		v		
मम	पप	ध	मपध	मम	पप	धध	निनि	
x		1		2		3		
पप	धध	नि	पधनि	पप	धध	निनि	सस	
x		v		x		v		
सस	निनि	ध	सनिध	सस	निनि	धध	पप	
x		1		2		3		
निनि	धध	प	निधप	निनि	धध	पप	मम	
x		v		x		v		
धध	पप	म	धपम	धध	पप	मम	गग	
x		1		2		3		
पप	मम	ग	पमग	पप	मम	गग	रिरि	
x		v		x		v		
मम	गग	रि	मगरि	मम	गग	रिरि	सस	

III. द्रुत गति

x	1	2	3
सस रिरिग सरिग	सस रिरि गग मम	रिरि गग मरि गम	रिरि गग मम पप
x	v	x	v
गग ममप समप	गग मम पप धध	मम पप धम पध	मम पप धध निनि
x	1	2	3
पप धधनि पधनि	पप धध निनि संसं	संसं निनिध संनिध	संसं निनि धध पप
x	v	x	v
निनि धध पनि धप	निनिधध पप मम	धध पपम धपम	धध पप मम गग
x	1	2	3
पप मम गपमग	पप मम गग रिरि	मम गग रिग गरि	मम गग रिरि सस

टिप्पणी

2.1.9 विलंबित गति

x		1		2		3		x		v		x		v	
स	स	रि	रि	ग	स	रि	स	ग	स	रि	ग	स	रि	ग	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
रि	रि	ग	ग	म	रि	ग	रि	म	रि	ग	म	रि	ग	म	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
ग	ग	म	म	प	ग	म	ग	प	ग	म	प	ग	म	प	ध
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	प	प	ध	म	प	म	ध	म	प	ध	म	प	ध	नि
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	ध	ध	नि	प	ध	प	नि	प	ध	नि	प	ध	नि	सं
x		1		2		3		x		v		x		v	
सं	सं	नि	नि	ध	सं	नि	सं	ध	सं	नि	ध	सं	नि	ध	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
नि	नि	ध	ध	प	नि	ध	नि	प	नि	ध	प	नि	ध	प	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
ध	ध	प	प	म	ध	प	ध	म	ध	प	म	ध	प	म	ग
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	प	म	म	ग	प	म	प	ग	प	म	ग	प	न	ग	रि
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	म	ग	ग	रि	म	ग	म	रि	क	ग	रि	म	ग	रि	स

II मध्य गति

x		1		2		3	
सस	रिरि	ग	सरिस	ग	सरिग	सरिगम	
x		v		x		v	
रिरि	गग	म	रिगरि	मरि	गम	रिगमप	
x		1		2		3	
गग	मम	प	गमग	पग	मप	गमपध	
x		v		x		v	
मम	पप	ध	मपम	धमप	पध	मपधनि	
x		1		2		3	
पप	धध	नि	पध	पनि	पधनि	पधनिस	

| x   v | x   v ||
संसं निनि ध संनिसं | धसं निध संनिधप ||

|| x   1   2   3 |
निनि धध प निध निप निधप निधपम |

| x   v | x   v ||
धध पप म धपध | मध पम धपमग ||

|| x   1   2   3 |
पप मम ग पम पग पमग पमगरि |

| x   v | x   v ||
मम गग रि मगम | रिम गरि मगरिस ||

III द्रुत गति

|| x   1   2   3 |
सस रिरि सरिस ग स रि ग स रि ग म रिरि गग म रिगर म रि गम रिग मप |

| x   v | x   v ||
गग मम पग मप प गमप गमपध | मम पपध मप मध मपधमपधनि ||

|| x   1   2   3 |
पप धधनीपधनि नीधधनिपधनीसं संसं निनिध संनि संधसंनीध संनीध प |

| x   v | x   v ||
निनि धध प नीधनि पनीधपनीधपम | धध पप म ध प धम धपम ध पमग ||

|| x   1   2   3 |
पप ममगपम पगपमगपमगरि ममगगरिमगमरि म गरि मग रिस |

(उक्त की पुनरावृत्ति करें!)

2.1.10 विलंबित गति

|| x   1   2   3 | x   v | x   v ||
स स रि स ऽ रि स रि | ग रि ऽ ग | रि ग ग म ||

|| x   1   2   3 | x   v | x   v ||
स स रि रि ग स रि स | ग स रि ग | स रि ग म ||

|| x   1   2   3 | x   v | x   v ||
रि रि ग रि ऽ ग रि ग | म ग ऽ म | ग म म प ||

|| 1   2   3 | x | x ||
रि रि ग ग म रि ग रि | म रि ग म | रि ग म प ||

|| x   1   2   3 | x   v | x   v ||
ग ग म ग ऽ म ग म | प म ऽ प | म प प ध
ग ग म म प ग म ग | प ग म प | ग म प ध ||

टिप्पणी

x		1		2		3		x		v		x		v		‖
म	म	प	म	ऽ	प	म	प	ध	प	ऽ	ध	प	ध	ध	नि	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
म	म	प	प	ध	म	प	म	ध	म	प	ध	म	प	ध	नि	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
प	प	ध	प	ऽ	ध	प	ध	नि	ध	ऽ	नि	ध	नि	नि	सं	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
प	प	ध	ध	नि	प	ध	प	नि	प	ध	नि	प	ध	नि	सं	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
सं	सं	नि	सं	ऽ	नि	सं	नि	ध	नि	ऽ	ध	नि	ध	ध	प	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
सं	सं	नि	नि	ध	सं	नि	सं	ध	सं	नि	ध	सं	नि	ध	प	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
नि	नि	ध	नि	ऽ	ध	नि	ध	प	ध	ऽ	प	ध	प	प	म	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
नि	नि	ध	ध	प	नि	ध	नि	प	नि	ध	प	नि	ध	प	म	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
ध	ध	प	ध	ऽ	प	ध	प	म	प	ऽ	म	प	म	म	ग	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
ध	ध	प	प	म	ध	प	ध	म	ध	प	म	ध	प	म	ग	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
प	प	म	प	ऽ	म	प	म	ग	म	ऽ	ग	म	ग	ग	रि	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
प	प	म	म	ग	प	म	प	ग	प	म	ग	प	म	ग	रि	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
म	म	ग	म	ऽ	ग	म	ग	रि	ग	ऽ	रि	ग	रि	रि	स	
x		1		2		3		x		v		x		v		‖
म	म	ग	ग	रि	म	ग	म	रि	म	ग	रि	म	ग	रि	स	

II मध्य गति

x		1		2		3
सस	रि	स	रि	सरिग	रिग	रिगगम
x		v		x	v	
सस	रिरि	ग	सरिस	गसरिगसरिगम		
x		1		2		3
रिरि	ग	रिग	रिग	मग	म	गममप
x		v			x	v
रिरि	गग	म	रिगरि		मरिगम	रिगमप
x		1		2		3
गग	म	ग	म	गमप	मप	मपपध
x		v			x	v
गग	मम	प	गमग		पमगप	गमपध
x	1			2		3
ममप	म	प	मप	ध	पध	पधधनि
x		v		x		v
मम	पप	ध	मपम	धमपध		मपधनि
x	1		2		3	
पपध	पध	पध	निध	नि		धनिनिसं
x		v			x	v
पप	धध	नि	पधप		निपधनि	पधनिसं
x	1			2		3
संसंनि	सं	नि	सं	निध	निध	निधधप
x		v		x		v
संसं	निनि	ध	संनिसं	धसंनिध		संनिधप
x		1	2	3		
निनिध		निध	निधप	धपध		पपम
x		v		x		v
निनिधध		प	निधनि	पनिधप		निधपम
x		1	2			3
धधप		धप	धपम	पम		पममग
x		v		x		v
धध	पप	म	धपध	मधपम		धपमग

x	1	2		3
पपम	पम	पमग	मग	मगगरि
x		v x		v
पपमम ग		पमप गपमग	पमगरि	
x	1	2	3	
ममग	मग	मगरि गरि	गरिरिस	
x		v	x	v
मम	गग	रि मगम	रिमगरि	मगरिस

III. द्रुत गति

x	1	2	3
सस रिस रिसरि	गरिगरिगगम	ससरिरिगसरिस	गसरिगसरिगम
x	v	x	v
रिरिगरिगरिग	मगमगममप	रिरिगगमरिगरि	मरिगमरिगमप
x	1	2	3
गममगमगम	पमपमपपध	गगममपगमग	पगमपगमपध
x	v	x	v
ममपमपमप	धपधपधधनि	ममपपधमपम	धमपधमपधनि
x	1	2	3
पपधपधपध	निधनिधनिनिस	पपधधनिपधप	निधपनिपधनिस
x	v	x	v
संसंनिसंपसनिनि	धनिधनिधधप	संसंनिनिधसंनिसं	धसनिधसनिधप
x	1	2	3
निनिधनिधनिध	पधपधपपम	निनिधधपनिधनि	पनिधपनिपपम
x	v	x	v
धधपधपधप	मपमपममग	धधपपमधपध	मधपमधपमग
x	1	2	3
पपमपमपम	गमगमगगरि	पपममगपमप	गपमगपमगरि
x	v	x	v
ममगगमग	रिगरिगरिरिस	ममगगरिमगम	रिमगरिमगरिस

2.2 धातु वरिसई

2.2.1 विलंबित गति

1.

x		1		2		3		x		v		x		v	
स	म	ग	म	रि	ग	स	रि	स	स	रि	रि	ग	ग	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
रि	प	म	प	ग	म	रि	ग	रि	रि	ग	ग	म	म	प	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
ग	ध	प	ध	म	प	ग	म	ग	ग	म	म	प	प	ध	ध
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	नि	ध	नि	प	ध	म	प	म	म	प	प	ध	ध	नि	नि
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	सं	नि	सं	ध	नि	प	ध	प	प	ध	ध	नि	नि	सं	सं
x		1		2		3		x		v		x		v	
सं	प	ध	प	नि	ध	सं	नि	सं	सं	नि	नि	ध	ध	प	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
नि	म	प	म	ध	प	नि	ध	नि	नि	ध	ध	प	प	म	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
ध	ग	म	ग	प	म	ध	प	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	रि	ग	रि	म	ग	प	म	प	प	म	म	ग	ग	रि	रि
x		1		2		3		x		v			x		v
म	स	रि	स	ग	रि	म	ग	म	म	ग	ग	रि	रि	स	स

II मध्य गति

x	1	2	3
समगम	रिग सरि	ससरिरि	गगमम
x	v	x	v
रिपमप	गमरिग	रिरि गग	ममपप
x	1	2	3
गधपध	मपगम	गगमम	पपधध
x	v	x	v
मनिधनि	पधमप	मम पप	धध निनि

टिप्पणी

|| x 1 2 3 | पस निस धनि पध | पप धध निनि संसं |

| x v x v | संपध पनि धसंनि | संसं निनि धध पप ||

|| x 1 2 3 | निम पम धप निध | निनि धध पप मम |

| x v x v | धग मग पम धप | धध पप मम गग ||

|| x 1 2 3 | परि गरि मग पम | पप मम गग ररि |

| x v x v | मस रिस गरि मग | मम गग ररि सस ||

III द्रुत गति

|| x 1 2 3 | समगमरिगसरि | ससररिरिगगमम | रिपमपगमरिग | ररिरिगगममपप |

| x v x v | गधपधमपगम | गगममपपधध | मनिधनिपधमप | ममपपधधनिनि ||

|| x 1 2 3 | पसंनिसंधनिपध | पपधधनिनिसस | संपधपनिधसंनि | ससनिनिधधपप |

| x v x v | निमपमधपनिध | निनिधधपपमम | धगमगपमपध | धधपपममगग ||

|| x 1 2 3 | परिगरिमगपम | पपममगगररि | मसरिसगरिमग | ममगगररिरिसस |

(तालचक्र पूरा करने के लिए उक्त की पुनरावृत्ति करें)

2.2.2 विलंबित गति

|| x 1 2 3 x v x v | स रि स ग रि ग म ग | स ग रि ग | स रि ग म |

| x 1 2 3 x v x v | रि ग रि म ग म प म | रि म ग म | रि ग म प ||

|| x 1 2 3 x v x v | ग म ग प म प ध प | ग प म प | ग म प ध |

x		1		2		3		x		v		x		v	
म	प	म	ध	प	ध	नि	ध	म	ध	प	ध	म	प	ध	नि
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	ध	प	नि	ध	नि	सं	नि	प	नि	ध	नि	प	ध	नि	सं
x		1		2		3		x		v		x		v	
सं	नि	सं	ध	नि	ध	प	ध	सं	ध	नि	ध	सं	नि	ध	प
x		1		2		3		x		v		x		v	
नि	ध	नि	प	ध	प	म	प	नि	प	ध	प	नि	ध	प	म
x		1		2		3		x		v		x		v	
ध	प	ध	म	प	म	ग	म	ध	म	प	म	ध	प	म	ग
x		1		2		3		x		v		x		v	
प	म	प	ग	म	ग	रि	ग	प	ग	म	ग	प	म	ग	रि
x		1		2		3		x		v		x		v	
म	ग	म	रि	ग	रि	स	रि	म	रि	ग	रि	म	ग	रि	स

II मध्य गति

x		1		2		3
सरि	सग	रिग	मग	सग	रिग	सरिगम
x		v		x		v
रिग	रिम	गम	पम	रिम	गम	रिमप
x		1		2		3
गम	गप	मप	धप	गप	मप	गमपध:
x		v		x		v
मप	मध	पध	निध	मध	पध	मपधनि
x		1		2		3
पध	पनि	धनि	संनि	पनि	धनि	पधनिसं
x		v		x		v
संनि	संध	निध	पध	संध	निध	संनिधप
x		1		2		3
निध	निप	धप	मप	निप	धप	निधपम
x		v		x		v
धप	धम	पम	गम	धम	पम	धपमग
x		1		2		3
पम	पग	मग	रिग	पग	मग	पम गरि

टिप्पणी

x		v		x		v	
मग	मरि	गरि	सरि	मरि	गरि	मग	रिस

III द्रुत गति

x	1	2	3
सरिसगरिगमग	समरिगसरिगम	रिगरिमगमपम	रिमगमरिगमप
x	v	x	v
गपगपमधपध	गपमपगमपध	मपमधपधनिध	मधपधमपधनि
x	1	2	3
पधपिनधनिसनि	पनिधनिपधनिसं	सनिसंधनिधपध	संधनिपसंनिधप
x	v	x	v
निधनिपधपमप	निपधपनिधपम	धपधमपमगम	धमपमधपमग
x	1	2	3
पमपगमगरिग	पगमगपमरिग	मगमरिगरिसरि	मरिगरिमगरिस

पाठगत प्रश्न

1. धातु वरिसई का दूसरा प्रचलित नाम क्या है?
2. उस वरिसई का नाम बताएं जिसमें एक स्वर के पश्चात् उसी स्वर का गायन किया जाता है।

प्रस्तावित अभ्यास कार्य

1. अन्य प्रचलित धातु वरिसई लिखें तथा चारों गतियों में इनका अभ्यास करें।
2. उक्त दोनों वरिसई का संकराभरणम या कल्याणी राग में अभ्यास करें।

3

अलंकारम्

अलंकार का शाब्दिक अर्थ सजावट-अलंकरण से है जबकि संगीत में अलंकार का आशय स्वर-समूह के ऐसे मनमोहक प्रस्तुतीकरण से है जिनका ध्रुव, मत्य आदि सप्तताल के साथ गायन किया जाता है। इन्हें सप्तताल अलंकरण कहते हैं। संगीत सीखने वाले को बहुत अधिक सजग एवं केंद्रित रहना आवश्यक है ताकि स्वरस्थानों की विशुद्धता और उनके स्वरूप को बनाए रखते हुए अलग-अलग लय एवं गति में इनका गायन कर सके।

अलंकार ऐसे क्रमानुसार और नियमबद्ध स्वरसमूह है जिन्हें प्रत्येक सुल्दी सप्तताल के अनुसार रखा जाता है।

कर्नाटक संगीत में कुल 35 अलंकार हैं। प्रत्येक ताल परिवार अर्थात् एका, रूपक, त्रिपुट, झंप, मत्य, ध्रुव और अठा के लिए पांच-पांच अलंकार हैं।

अलंकार का अभ्यास करने से संगीत सीखने वाले की एक-साथ स्वरस्थान और ताल पर पकड़ मजबूत होती है। विभिन्न गतियों और लय पर गमक के साथ अलंकार गायन करने से राग को समझने में भी सहायता मिलती है।

उद्देश्य:

इस पाठ के पश्चात् शिक्षार्थी निम्नलिखित कार्य कर सकेंगे:-

- विभिन्न गति पद्धति के अनुसार गायन
- सप्तताल का विस्तृत वर्णन
- शुद्ध लय के साथ गायन
- अलग-अलग 'गति' के अनुसार

अलंकारम्

3.1 चतुश्र जाति ध्रुव तालम् (14 अक्षरकालास)

गणना पद्धति — $1_4\ 0\ 1_4\ 1_4$

x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3
सऽ	रीऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रीऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	रीऽ	सऽ	रीऽ	गऽ	मऽ
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3
रीऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रीऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रीऽ	गऽ	मऽ	पऽ
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3
गऽ	मऽ	पऽ	घऽ	पऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	ध़ऽ

टिप्पणी

x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
मऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	नीऽ		
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
पऽ	धऽ	नीऽ	सऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	सऽ		
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
पऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	सऽ	नीऽ	धऽ	नीऽ	सऽ	नीऽ	धऽ	पऽ		
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
नीऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	मऽ		
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ		
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ		
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3	x	1	2	3		
मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ		

3.2 चतुश्र जाति मत्य तालम् (10 अक्षरकालास)

इसका मध्यम (सैकेण्ड) और द्रुत गति से भी गायन किया जाएगा।

गणना पद्धति — $1_4\,01_4$

x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
सऽ	रिऽ	गऽ	रिऽ	सऽ	रिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
रिऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	नीऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
पऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	संऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
संऽ	नीऽ	धऽ	नीऽ	संऽ	नीऽ	संऽ	नीऽ	धऽ	पऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
नीऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	मऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
धऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
पऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ						
x	1	2	3	x	v	x	1	2	3						
मऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ						

3.3 चतुश्र जाति रूपक ताल (6 अक्षर कास)

गणना पद्धति — 0 1_4

x	v	x	1	2	3
सऽ	रिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ
x	v	x	1	2	3
रिऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ
x	v	x	1	2	3
गऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ
x	v	x	1	2	3
मऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	नीऽ
x	v	x	1	2	3
पऽ	धऽ	पऽ	धऽ	नीऽ	संऽ
x	v	x	1	2	3
संऽ	नीऽ	संऽ	नीऽ	धऽ	पऽ
x	v	x	1	2	3
नीऽ	धऽ	नीऽ	धऽ	पऽ	मऽ
x	v	x	1	2	3
धऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ
x	v	x	1	2	3
पऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ
x	v	x	1	2	3
मऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

3.4 मिश्र जाति झंप ताल (10 अक्षरकालास)

गणना पद्धति: — 1_7‿0

x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	सऽ	रिऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	मऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
रिऽ	गऽ	मऽ	रिऽ	गऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ	पऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	गऽ	मऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ	ऽऽ

टिप्पणी

x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
मऽ	पऽ	धऽ	मऽ	पऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ	निऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
पऽ	धऽ	निऽ	पऽ	धऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सं॒ऽ	सऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
सं॒ऽ	निऽ	धऽ	सं॒ऽ	निऽ	सं॒ऽ	निऽ	धऽ	पऽ	पऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
निऽ	धऽ	पऽ	पऽ	धऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ	मऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
धऽ	पऽ	मऽ	धऽ	पऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	गऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
पऽ	मऽ	गऽ	पऽ	मऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	रिऽ
x	1	2	3	4	5	6	x	x	v
मऽ	गऽ	रिऽ	मऽ	गऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ	सऽ

3.5 तिस्र जाति त्रिपुट ताल (7 अक्षरकालास)

गणना पद्धति — $1_3\,0\,0$

x	1	2	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	गऽ	सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ
x	1	2	x	v	x	v
रिऽ	गऽ	मऽ	रिऽ	गऽ	मऽ	पऽ
x	1	2	x	v	x	v
गऽ	मऽ	पऽ	गऽ	मऽ	पऽ	धऽ
x	1	2	x	v	x	v
मऽ	पऽ	धऽ	मऽ	पऽ	धऽ	निऽ
x	1	2	x	v	x	v
पऽ	धऽ	निऽ	पऽ	धऽ	निऽ	सं॒ऽ
x	1	2	x	v	x	v
सं॒ऽ	निऽ	धऽ	सं॒ऽ	निऽ	धऽ	पऽ
x	1	2	x	v	x	v
निऽ	धऽ	पऽ	निऽ	धऽ	पऽ	मऽ
x	1	2	x	v	x	v
धऽ	पऽ	मऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ

x	1	2	x	v	x	v
पऽ	मऽ	गऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रिऽ
x	1	2	x	v	x	v
मऽ	गऽ	रिऽ	मऽ	गऽ	रिऽ	सऽ

3.6 खंड जाति अटा ताल (14 अक्षरकालास)

गणना पद्धति — $1_5\ 1_5\ 0\ 0$

x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
सऽ	रिऽ	रिऽ	गऽ	गऽ	सऽ	ऽऽ	रिऽ	गऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
रिऽ	गऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ	गऽ	मऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
गऽ	मऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	गऽ	ऽऽ	मऽ	पऽ	ऽऽ	धऽ	ऽऽ	धऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
मऽ	पऽ	ऽऽ	धऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ	पऽ	धऽ	ऽऽ	निऽ	ऽऽ	निऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
पऽ	धऽ	ऽऽ	निऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	धऽ	मिऽ	ऽऽ	संऽ	ऽऽ	संऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
संऽ	निऽ	ऽऽ	धऽ	निऽ	संऽ	ऽऽ	निऽ	धऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
निऽ	धऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	निऽ	ऽऽ	धऽ	पऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
धऽ	पऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ	धऽ	ऽऽ	पऽ	मऽ	ऽऽ	गऽ	ऽऽ	गऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
पऽ	मऽ	ऽऽ	गऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	मऽ	गऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ
x	1	2	3	4	x	1	2	3	4	x	v	x	v
मऽ	गऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ	मऽ	ऽऽ	गऽ	रिऽ	ऽऽ	सऽ	ऽऽ	सऽ	ऽऽ

3.7 चतुश्र जाति एका तालम (4 अक्षरकास)

गणना पद्धति– 1_4

x	1	2	3
सऽ	रिऽ	गऽ	मऽ

टिप्पणी

|| x 1 2 3
रिऽ गऽ मऽ पऽ ||

|| x 1 2 3
गऽ मऽ पऽ धऽ ||

|| x 1 2 3
मऽ पऽ धऽ निऽ ||

|| x 1 2 3
पऽ धऽ निऽ सऽ ||

|| x 1 2 3
सं ऽ निऽ धऽ पऽ ||

|| x 1 2 3
निऽ धऽ पऽ मऽ ||

|| x 1 2 3
धऽ पऽ मऽ गऽ ||

|| x 1 2 3
पऽ मऽ गऽ रिऽ ||

|| x 1 2 3
मऽ गऽ रिऽ सऽ ||

पाठगत प्रश्न

1. चतुश्र जाति ध्रुव ताल की अक्षरकास बताएं।
2. अनुहतम् अंग्स वाली ताल का नाम बताएं।
3. 7 अक्षरकास वाली ताल लिखें।

प्रस्तावित अभ्यास कार्य

1. इन अलंकारों का सभी प्रमुख रागों में अभ्यास करें।
2. उदावा और षड्वा राग में इन अलंकारों का

4

पिल्लरी गीत तथा संचारी गीत

गीत वे सरल रचनायें हैं, जिन्हें प्रथम बार कर्नाटक संगीत सीखना प्रारंभ करने वाले विद्यार्थी साहित्यिक भाग के रूप में सीखते हैं। इन रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को राग, उसके संचार, स्वरस्थानों- स्वरों की विविधता, के चलन इत्यादि के विषय में स्पष्ट रूप से समझ प्राप्त होगी। इन रचनाओं में शब्दों का अधिक महत्त्व नहीं होता है। सामान्यतया ये देवताओं अथवा देवियों के गुणगान से संबंधित होते हैं। वे गीत (गीतं), जिनमें भगवान गणेश का गुणगान होता है, पिल्लरी गीत कहलाते हैं तथा अन्य संचारी गीत कहलाते हैं। गीतों का साधारणत: लय की तीन अवस्थाओं में बिना अधिक गमक और संगतियों के अभ्यास होता है। यहां पर राग मलहारी में एक पिल्लरी गीत और राग शुद्ध, सावेरी और मोहनं में दो संचारी गीत का उदाहरण दिया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, शिद्यार्थी :

- राग की मूल संरचना बता पायेगा;
- एक रचना को स्वरों एवं पदों सहित गा पायेगा;
- रचना को भिन्न लयों में प्रस्तुत कर पायेगा;
- आवाज के गुण को विकसित कर पायेगा।

4.1 पिल्लरी गीतं

राग मलहारी ताल रूपकं (चतुरस्रजाति)

15वें मेल जन्य

आरोहनं- स $रि_1$ $म_1$ प $ध_1$ स

अवरोहनं- $स_1$ $ध_1$ प $म_1$ $ग_2$ $रि_1$ स

यह एक औडव- षाडव राग है, अर्थात्

आरोहनं में स रि म प ध, केवल पांच स्वर तथा अवरोहनं में स ध प म ग रि, छह स्वर हैं।

वादी–रि संवादी–ध

गीतं

1. श्री गननाथ – सिंदुरवरन
   करुनासागर – करीवदन
   लंबोदर – लकुमीकर
   अंबासुत – अमरविनुत (लंबोदर)

2. सिद्ध चरन गनसेवित
   सिद्धि विनायक ते नमोनम: (लंबोदर)

3. सकल विद्यादि पूजित
   सर्वोत्तम ते नमोनम: (लंबोदर)

1. म प | ध सं सं रिं || रिं सं | ध प म प ||
   श्री | गननाथ || सिंदु | र – वर न ||

   रि म | प ध म प || ध प | म ग रि स ||
   करु | ना सा गर || करी | व द – न ||

   स रि | म, ग रि || स रि | ग रि स , ||
   लं | बो– दर || ल कु | मी क र ||

   रि म | प ध म प || ध प | म ग रि स ||
   अं – | बा – सु त || अ म | र वि नु त ||

   स रि | म, ग रि || स रि | ग रि स, ||
   लं | बो–दर || ल कु | मी क र ||

2. म प | ध सं सं रिं || रिं सं | ध प म प ||
   सिद्ध | च – र न || ग न | से – वि त ||

   रि म | प ध म प || ध प | म ग रि स ||
   सिद्धि | विना यक || ते | नमो नमो ||

(लंबोदर)

टिप्पणी

3.	म	प	|	ध	सं	सं	रिं	||	रिं	सं	|	ध	प	म	प	||
	स	क	|	ल	वि	द्या	–	||	–	दि	|	पू	–	जि	त	||
	रि	म	|	प	ध	म	प	||	ध	प	|	म	ग	रि	स	||
	स	–	|	वों – त्तम				||	ते –		|	नमो नमो				||

(लंबोदर)

4.2 संचारी गीतं

राग – शुद्ध सावेरी ताल – तिस्रजाति त्रिपुट

29 वें मेल जन्य

4.3 रागं – शुद्ध धन्यासी 28वें मेल जन्य

आरोहनं – स रि$_2$ म$_1$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं – सं$_1$ ध$_2$ प म$_1$ रि$_2$ स

यह एक औडव राग है, अर्थात आरोहनं में पांच स्वर तथा अवरोहनं में पांच स्वर हैं।

वादी–रि संवादी–ध, ग

गीतं

आनलेकर उन्नि पोलदि
सकल शास्त्र पुराण दीनं

ताल दीनं ताल परिगतु
रे रे सेतु वाह
परिगतं नाम जटा जूट

रिं	मं	रिं	|	रिं	सं	|	ध	सं	||	सं	,	सं	|	ध	प	|	म	प	||
आ	–	न	|	ले	–	|	क	र	||	उ	–	न्नि	|	पो	–	|	ल	दि	||
ध	ध	सं	|	ध	,	|	ध	प	||	प	म	रि	|	ध	ध	|	ध	प	||
स	क	ल	|	शा	–	|	स्त्र	पु	||	रा	–	ण	|	दी	–	|	नं	–	||
प	,	प	|	ध	ध	|	ध	प	||	प	,	प	|	म	प	|	ध	प	||
ता	–	ल	|	दी	–	|	नं	–	||	ता	–	ल	|	प	रि	|	ग	तु	||
प	म	रि	|	स	रि	|	स	रि	||	प	म	प	|	स	रि	|	स	रि	||
रे	–	रे	|	अ	–	|	–	–	||	अ	–	–	|	अ	–	|	–	–	||

टिप्पणी

प प ध | प प | म रि || रि स रि | म , | म , ||
अ – – | अ – | – – || से – तु | वा – | ह , ||
ध प ध | सं , | सं , || रिं रिं सं | ध प | म प ||
प रि ग | त – | नाम – || ज टा – | जू – | ट ||
ध ध सं | ध , | ध प || प म रि | ध ध | ध प ||
स क ल | शा – | स्त्र पु || रा – ण | दी – | नं – ||
प , प | ध ध | ध प || प , प | म प | ध प ||
ता – ल | दी – | नं – || ता – ल | प रि | ग तु ||
प म रि | स रि | स रि || प म प | स रि | स रि ||
रे – रे | अ – | – – || अ – – | अ – | – – ||
प प ध | प प | म रि || रि स रि | म , | म , ||
अ – – | अ – | – – || से – तु | वा – | ह , ||
ध प ध | सं , | सं , || रिं रिं सं | ध प | म प ||
प रि ग | तं – | नाम – || | | ||

राग – मोहनं

28वें मेल हरिकांभोजी जन्य

आरोहनं– स $रि_2$ $ग_2$ प $ध_2$ सं

अवरोहनं– सं $ध_2$ प $ग_2$ $रि_2$ स

वादी– ग

संवादी–ध

संचार – गपगरिस, – रिधसरिग, – गरिगपध, – गधप, – गपधसरिगरि,
– गरिगपगरिस, – धसधप, – धपगपगरि, – सरिगपगरिस,

गीतं राग – मोहनं
ताल – रूपकं

वर वीना मृदुपानी वनरुहलोचनरानी
सुरु चीराबंबर वेणी सुरनु ता कल्याणी
निरुपम सुभगुन लोल नीरद जयप्रद शीले
वरद प्रिय रंगनायकी वंचित फल दायकी
सरसीजसन जननी जय जय जय जय वानी

टिप्पणी

रागं : मोहनं तालं : रूपकं

||	x	x	v	||	x	x	v
||	गग	प	प	||	धप	सं	सं
	व र	वी	ना		मृदु		पानी
||	x	x	v	||	x	x	v
||	रिस	धध	प	||	धप	गग	रि
	वन	रुह	लो		चन	रा	नी
||	x	x	v	||	x	x	v
||	गप	धस	ध	||	धप	गग	रि
	सुरु	चीरा	बं		बर	वे –	णी
||	x	x	v	||	x	x	v
||	गग	धप	ग	||	पग	गरि	स
	सुरनुता		कल		या –	– –	णी
||	x	x	v	||	x	x	v
||	गग	गग	गरि	||	पग	प	प
	निरु	पम	सुभ		गुन	लो	ल
||	x	x	v	||	x	x	v
||	गग	धप	ध	||	पध	सं	सं
	नीर	दज	य		प्रद	शीले	
||	x	x	v	||	x	x	v
||	धगं	रिंरिं	संसं	||	धसं	धध	पप
	वर	द –	प्रिय		रग	ना –	यकी
||	x	x	v	||	x	x	v
||	गप	धसं	धप	||	धप	गग	रिसं
	वं –	चित	फल		दा –	– –	यकी
||	x	x	v	||	x	x	v
||	सरि	ग	ग	||	प	ग	रि

टिप्पणी

	सर	सी	ज		सन	जन	नी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	स रि	स ग	रि स	‖	रि ध	स	स	‖
	जय	जय	जय		जय	वा	नी	

पाठगत प्रश्न

1. एक औडव- षाडव राग के नाम का उल्लेख कीजिये।
2. वे गीत जिनमें भगवान गणेश का गुणगान होता है, क्या कहलाते हैं?
3. शुद्ध सावेरी राग कौन से मेल की जन्य राग है?
4. किसी एक सात अक्षर काल अवधि युक्त ताल का नाम बताइये।

निर्देशित कार्य कलाप

1. सीखे गये गीतं तीन लयों में गाने का प्रयास करें।
2. आपके द्वारा सीखे गये गीतं के स्वरों के लिये स्वर वर्ण अभ्यासों को गायें।

टिप्पणी

5

जाति स्वर और स्वर जति

स्वर जति अभ्यास गान और सभा गान दोनों से संबंधित एक संगीत विधा है। यद्यपि अभ्यास गान में प्रयुक्त होने वाली स्वर जतियां बहुत सरल होती हैं, श्यामा शास्त्री और पोनिया पिल्लै द्वारा रचित उच्च स्तरीय स्वर जतियां एक वरिष्ठ संगीतज्ञ के लिये भी कठिन हैं। इस संगीत विधा में पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण जैसे विभाग हैं। कई स्वर जतियों में अनेक चरण होते हैं जिनमें साहित्य के पश्चात उसके स्वर लिये जाते हैं। जहां बिलहरी और खमास की स्वर जतियां आरंभिक विद्यार्थी को राग का अनुमान देती हैं, वहीं श्यामा शास्त्री द्वारा रचित भैरवी, यदुकुल कांबोजी और तोड़ी की स्वर जतियां उन रागों का उत्कृष्ठतम उदाहरण हैं।

जाति स्वरं अभ्यास गान से संबंधित एक संगीत विधा है। इसे गीतों के पश्चात् सिखाया जाता है। जैसा कि नाम से ज्ञात होता है, जाति स्वरं में केवल स्वर समुदाय होते हैं, साहित्य नहीं। रचना में पल्लवी और कई चरण होते हैं। क्योंकि इनमें केवल स्वर होते हैं, इन्हें स्वर पल्लवी भी कहते हैं। जाति स्वरं सामान्यतया भरत्नाट्यं सभाओं में प्रस्तुत होते हैं। नर्तक द्वारा जाति अनुच्छेद से प्रस्तुति का आरंभ होता है, जिसके पश्चात रचना प्रस्तुत होती है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी

- स्वर स्थान पूर्णतया बता पायेगा
- पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणं के नमूने लिख पायेगा
- विभिन्न लय प्रतिरूपों का ज्ञान बढ़ा पायेगा
- जातिस्वर विधा को परिभाषित कर पायेगा

5.1 रागलक्षणं

5.1.1 रागं शंकराभरणं

29वां मेल

72 मेलकर्ता प्रणाली में धीर शंकराभरण

आरोहनं– स रि$_2$ ग$_2$ म$_1$ प ध$_2$ नि$_2$ सं

अवरोहनं– सं नि$_2$ ध$_2$ प म$_1$ ग$_2$ रि$_2$ स

संचारं

ग म प ध, प,	ग, म प ग रि, स,	स,, निछ स रि, स,	रि स, नि ध नि, स,
स रि ग, म ग	रि ग, स, स रि ग	म ग,,,	म ग, म, य ; प,
प, प ध, नि, प,	ध, नि, , सं,,,	सं रिं गं रिं गं, ,,	गं, मं पं गं रिं, सं, , नि
ग रि स नि ध, प,	– प रि, ग,	ग, म प ग रि, स,	

रागं: शंकराभरणं तालं: रूपकं

पल्लवी

X		X		V		X		X		V	
सं	;	सं	रिं	सं	नि	ध	प	;	म	ग	म

X		X		V		X		X		V	
प	;	;	सं	ध	प	म	ग	रि	गम	प	धनि

चरण

1.

X		X		V		X	X	V	
प	;	;	ध प	म	प म	ग म ग	रि ग रि	स	सनि़

X		X		V		X	X	V
स	;	;	स नि़	स,	गरि	ग मग	म	प म प ध नि

2.

X		X	V	X	X	V
म	;	य	प म ग स रि ग	म	; ;	प ध प प म ग

X		X		V		X	X	V
म	;	;	प सं नि		धप	म ; ;	ग रि ग स रि ग	

X	X	V	X	X	V
म, ग	स रि स म ग स प प		म ग	ध प प म ग म प ध नि	

3. || x x v || x x v ||
|| सं, ; ; रिं सं नि सं नि ध || नि ध प ध प म प म ग म ग रि ||

|| x x v || x x v ||
|| स ; ; स नि़ रि स ग रि || म ग प म ध प नि ध सं नि रिं नि ||

|| x x v || x x v ||
|| सं; ; ; ; निध निसं || निय ; ; ; ध प म ध ||

|| x x v x || x x v ||
|| प ; ; ; म ग रि ग || स ; ; रि ग मपध नि ||

|| x x v || x x v ||
|| संसं पप स स स प || प सं नि ध प म ग म प ध नि ||

5.1.2 रागलक्षणं

रागं खमास

28वें मेल हरिकांबोजी जन्य

आरोहनं- स म$_1$ ग$_2$ म$_1$ प ध$_2$ नि$_1$ सं

अवरोहनं- सं नि$_1$ ध$_2$ प म$_1$ ग$_2$ रि$_2$ स

जातिः वक्र षाडव संपूर्ण

भाषांग रागः अन्य स्वर काकली निषादं

वादीः मध्यमं

संवादीः निषादं

संचारं

ग म नि ध ; ,-	ध नि सं ध नि प, - -	ध नि सं नि सं, , , -
ध नि सं गं रिं	मं गं रिं, संय-	नि सं नि सं रिं नि - नि, नि
नि ध प	प रिं सं सं, नि ध प	म ग म; , ,
म ग ग रि,	सय ; , -	

पल्लवी

संबा शिवायनवे रजितगिरि

संभावी मनोहर परतपर कृपाकर श्री

चरणं

1. नीवगुरु देवंबुनी येवलनु सेविंपुसु सदा मदिनिसिवा

2. परम दयानिधि वनुचु
   मरुवकनहृदयमना
   महादेव महाप्रभो सुंदर नायक
   सुरवर दायक भाव भय हरशिव

3. स्थिर मधुर पुरमुन
   वरमुलो सगुहरनि निरतमुनदलची

4. श्री शुभाकर शशि मकुटधर
   जय विजय त्रिपुराहर
   श्रीतजन लोलतभूतगुन शील
   कतनुत भालपतितुनी लोल
   मुदम बल रंग पदब्ज मुलंदु
   पदमबलजरचु पसुपतिनी
   ज्ञानमु ध्यानमु स्नानमु पानमु
   दानमु मानमु अभिमा न मानुचु
   कनिकर मुनचरणम बलकुनु
   कोनुश्रुतु लनुदलसरनु नच्चु

5. सरस रेकुनि नममंतरम
   कोरिननु नीपदब्ज मंत्रम
   दासदौ चिन्नी कृषनुनिकीदिकुनि
   वेयनि चोक्कनिदुनि नम्मुकोनि

5.2 स्वर जति

रागं: खमास तालं: आदि

पल्लवी

x					1		2		3		
सं	;	;	,	–	स	नि	ध	प	,	म	ग
सं						बा	शि	वा	–	य	न
x					v			x		v	

|| म ; ; ग म प ध न |
|| वी - - रा जी था गी. तपी |

| x 1 2 | 3 ||
| सं, , रं नं, , सं ध, | , न प, , द ||

|| सा - - मबहा वी - - मा नो – हा रा – पा |
|| x v x v |

| म , , प म, , ग म, |, प ध, , न ||
| रा - - थपा रा करू पा | - - का रा - - श्री || (सम)

चरणं -1

|| x 1 2 3 |
|| सं, रं, सं न न, सं, न ध ध, न, |

नी – वे गुरू डाई वाम बनी ये – ये

|| x v | x v ||
|| डीपीम, ड, मग | सम, ग मपडीन ||

लानू से वीम – पुसु साधा-मा धीनीसीवा

(सम)

चरणं -2

|| x 1 2 3 |
|| सं रं सं न सं ; नसं नडी न ; |

पा रा मा डे अ - - - निधि वेन यू चू - - -

|| x v | x v ||
|| ध न ध प ध , , |, प प ध प मप ; ||

मा रू वा का ना - - - हरीधायामू ना - - -

|| x 1 2 3 ||
|| स सं सं सं म म मं म प प प प ध ध ध ध ||

महा देवा महाप्रभू सुन्ध्रा ना – या का

|| x v x v ||
|| न सं न सं न, ध पं ध प म ग म प ध न ||

सु रा वा रा दा – या का भावाभाया हारासीवा (साम)

चरणं -3

x				1				2			3			
ध	सं	नि	ध	प	म	ग	म	प	,	;	प	ध	नि	ध
स्थिरमधु		रपु		रमु		न	-	-	-		वरमुलो			

x				v	x			v				
प	म	ग	ग	म,	य	म	निं	ध	नि	ध	प	ध	नि
स	गु	ह	र	नि	- - -		नि	रत	मुन	दलची		

चरणं -4

x				1		2				3			
सं	,	;	;	स	नं	न	ध	ध	प	प	म	ग	ग
श्री		-	-	-	शुभा	का	रा	सा	सी	मा	कु	टाड	हा

x			v			x				v			
म	,	;	;	पं	ध	न	ध	म	ग	म	प	ध	न
रा	-	-	-	जया		विजयात्री				पुराहारा			

x				1		2				3	
सं	मं	गं	सं	सं,	सं,	सं	रं	सं	सं	न,	न,
सरिता जा		ना	लू	ला	था	भू	था	गाना	सी	ला	

x				v		x				v	
न	स	न	धं	ध,	धं,	प	ध	प	म	प,	प,
करुता		नाथा		भा	-	ला	पातीयूनी		लू	ला	

x				1			2			3	
स	म		मं	ग	पं,	प	म	ध,	ध	प न,	न
मू	धाम- बा			लरन-गा		पाधा-बजा			मुलान-धू		

x		v				x				v
धं	रं ,	रं	नं	सं ,	सं	न	सं	न	ध	प ;
पदम-		बू	लूजर	-		चू	पसू	पति	नि	- -

x				1			2			3
म	,	प	म	प ,	ध	प	ध ,	न	ध	न , सं न
गना-		नामू		धया	नामू	सनया-नामू		पा-नामू		

x			v			x			v	
सं,	रं	सं	रं,	सं	न	सं	रं	सं,	नं	ध प म
धा	-	नामू	मा	-	नामू	अभीमा–नामानुसु				

x				1				2	3	
ग	म	प	ध	न	सं	न	रां	सं ;	सं	रं न सं
कानीकारा			मुनाचारा		नाम	बू	लू	का	नू	

x				v	x				v	
ध	न	प	ध	म ;	ध	प	म	ग	म	प ध न

कोनू श्रयू थू लेन - - - नू थू लाचा रानानुसु (साम)

चरणं-5 खानदागती

x				1			2			3
सं	,	रं	सं,	न,	ध	न,	सं,	न	ध,	प ;
सा-रा सा				रि-कुनी		ना मा मन		तराम - - -		

x			v			x			v	
प,	ध	न,	ध,	प	म,	प,	म	ग,	म ;	

को-रिना नू-निपा धा भजमन ट्राम—

x			1			2			3		
म,	ग	म,	प,	म	प,	ध,	प	ध,	न,	ध	न,
धा	सू	डूव	ची	नी	क्रिस	शा	नू	नि	कि	धी कू नि	

x			v			x				v
सं,	रं	सं,	न,	ध	न,	सं	,	न	ध,	म, प ध,
वे-	ये	नि	शोक	–	काना	डू	निनाम	मु-कोनी		(शाम)

पाठगत प्रश्न

1. 72 मेलकर्ता प्रणाली में शंकराभरणं के पहले क्या उपसर्ग जोड़ा गया है?
2. खमास स्वर जति के अंतिम चरणं की कौन सी गति में रचना की गयी है?
3. राग खमास कौन से मेल की जन्य राग है?

टिप्पणी

निर्देशित कार्य कलाप

1. अभ्यास गान और सभा गान की स्वर जति में अंतर का विशलेषण करने का प्रयास करें।

2. विभिन्न जाति स्वरं एकत्र करने का प्रयास करें।

6

वर्ण

वर्ण ऐसी अन्य संगीत विधा है जो अभ्यास गानं और सभा गानं अर्थात मूल अभ्यास और प्रदर्शनकारी संगीत दोनों में मिलती है। वर्णं को सामान्यतया संगीत सभा के आरंभ में गाया जाता है। इसमें पद कम होते हैं और 'तानं' के अनुरूप रचित स्वर वर्ण विस्तार अधिक होता है। सभा गान के लिये रचित वर्णं को तान वर्णं कहते हैं। इसके दो भाग होते हैं। प्रथम भाग, जिसे 'पूर्वांग' कहते हैं, में पल्लवी, अनुपल्लवी और मुख्तायी स्वर होते हैं। दूसरा भाग, जिसमें चरण और चरण स्वर होते हैं, 'उत्तरांग' कहलाता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, शिद्यार्थी

- आवाज के गुण को सुधार पायेगा;
- विभिन्न स्वर प्रतिरूप बता पायेगा;
- गतियों के विभिन्न प्रतिरूप प्रस्तुत कर पायेगा;
- स्वर कल्पना का स्वरूप पहचान पायेगा।

रागः हंसध्वनि

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ प नि$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ प ग$_2$ रि$_2$ स

यह औडव- औडव राग है

वादी स्वरः ग

संवादीः नि

टिप्पणी

संचारं

ग रि ग प – ग प नि प ग रि – ग रि स निछ पछ , – पछ निछ स रि ग रि, – ग रि ग प नि, – नि प ग प नि सं, – प नि सं रिं गं रिं – गं रिं सं नि प – – ग प ग रि, – गं रिं सं,

पल्लवी

जलजक्ष निन्नेद भाषी

चल मरलु कोन्नदीर

अनुपल्लवी

चेलियनेल रवदेमीर

चेलुवुदैना श्री व्यंकटेश

चरणं

नीसति दोरनेगान

रागः हंसध्वनि **रचयिताः वीना कुप्पियर**

तालः आदि **आरोहनं- स रि ग प नि सं अवरोहनं- सं नि प ग रि स**

पल्लवी

ग , रि , स, , ,	–नि़ स रि ग रि रि़ स नि ।	–स रि स स नि़- प़ नि़ स ।	रि – प़च्छ , नि़ , स , रि ॥
ज ल ज , , ,	काक्षा , , , निन , ,	ने, , , , द, ,	, भा , , स आ ,
ग रि स–नि़ स रि–प़	नि़ स रि – ग प ग नि प	। – स नि़ स रि़, स नि़	प । प ग, रि, स, रि ॥
च, लं , , म , ,	, र , , लु , ,	को , , , , न्न, ,	, दी , , , र , ,

अनुपल्लवी

प ग रि स	–नि स रि ग,–रि रि स स नि़ पं ।	–नि सं रि ग, –स ग रि । ग	प, – नि सं , , , ॥
चे , , ,	लि , , , य , ने , ल , , ,	र , , व , , दे ,	, , , मीर, , ,
रिं, सं नि प	नि सं रिं गं–सं रिंगपं गं रिं सं नि	। रिं रिं सं नि प, –प ।	ग रि स नि प नि स रि ॥
चे , , लु ,	वु , दै , , ना , , , श्री,	व्यं , , कटे ,	, , श , , ,

मुख्तायी स्वरं

ग, रि ग रि स रि,	–निस रि ग रि रि स नि़ । रि,	–नि़ ग रि नि़ स रि ।	प़ नि़ स रि ग, , – प ॥
ग रि स रि,–ग प नि	–रि ग प, –नि़ स रि ग प ।	– प नि़ स़ रि, ग प नि ।	–रि ग प नि सं, , – रिं ॥
रिं सं नि प, – नि गं	रिं सं नि, –प नि सं रिं गं ।	– प, नि स, रिं गं रिं ।	–प नि सं रिं गं रिं– निरि ॥
गं पं गं रिं सं नि –सं	रिं सं नि प ग रि ग प नि ।	– ग रिं , सं नि प–रिं सं ।	, नि प – ग, रि स रि ॥

चरणं

	नि, , , , ,- सं	नि-गं रिं स नि प-प ग रि ।	ग, , ग रि स रि, ।	रि स नि स, रि ग प ॥
	नी , , , ,	स , , , ति , , दो , ,	र , , , , , ,	ने, , गा, न, ,
1.	॥ नि , , प , ,	ग, , रि, , स, नि़ ,	प , , रि , , नि़, ।	स, रि ग प ॥
2.	॥ नि, प ग रि	स रि, -ग रि स नि़ प़,-रि नि ॥	-ग रि नि़ प़ नि़ स ,	-रि ग -नि़ स, रि ग प ॥
3.	॥ निपगरि	नि़ग़रिनि़प़निपसनिरि स ग रि ।	प ग नि प सं नि रिं ।	निं गं रि-निं रि निपग ॥
	॥ प नि सं रिं गं-गप	निसंरि-रिगप निसनिगरिस नि ।	प- रि स नि प ग ।	रि -निछ स,रि गप ॥
4.	॥ सं , , , , ,	निरिसनिपग रि- स रि ग ।	प, , , , , सं नि ॥	प ग रि- स रि ग प नि ॥
	॥ सं रिं,- नि रिं नि प	-ग प रि, -ग प ग रि स ॥	रि नि,- ग रिपगनि ॥	- रि ग प नि सं ॥
	॥ नि प ग प , ,	-रि ग प नि, -ग प नि स रि ।	-प नि सं रिं, गं-निस ।	नि गं रिं रिंनिं,पनि ॥
	॥ गं रिं नि,-सं रिं पं	गं, रिं सं नि -प नि सं रिं ।	सं , ,प, ,-नि प ।	गरिस -नि, स रि ग प ॥

रागं: वसंत

14वें मेल सूर्यकांतं जन्य

आरोहनं- स म ग$_2$ म$_1$ ध$_2$ नि$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ ध$_2$ म$_1$ ग$_2$ रि$_1$ स

जाति: औडव शाडव

वादी स्वर: मध्यमं

संवादी: निषादं

संचारं

स ग म- ग म- ध नि ध म ग- ग म ग रि स-

नि स म ग म ध, - ध नि सं नि ध म ग म ध नि सं, - नि सं रिं रिं नि ध-

स म ग म ग रि स, - सं नि ध म ग, - ग म ग रि स-

वर्ण पल्लवी

निन्ने कोरियननुर

नेनरंची नन्नेरुकोर

अनुपल्लवी : पन्नग सयनुदौ श्री

पार्थसारथी देव

चरणं : सून सरनी बरी कोर्वलेर

टिप्पणी

रागं : वसंत **रचयिता: तचूर सिंगरचरिलु**

तालं : आदि **17वें मेल सूर्यकांतं जन्य** **आरोहनं- स म ग म ध नि सं**

अवरोहनं- सं नि ध म ग रि स

पल्लवी:- ॥ ग,म,ध,,, सं नि ध नि सं ,,, ध नि सं नि, ध ध नि धधमगम ग रि स ॥

नि, न्ने को , , , , , , , , रि , , , य , , , , , ननु , , , र , , , ,

॥रि स -नि़ध़,नि़स रि स-नि़ स म गम धनि । सं गं रिं सं नि ध स निं । धधमगम ग रि सा॥

ने , ,न , , रं , , ,ची, , , न न्ने , रु, , को , , , , र , , , ,

// ध,, ध म ध नि नि ध धम ग म ग रि स । म ग म स, रि स म । गं म ध नि सं,,,

प , , न्न , , ग , , , , स , , , , य , , नु ,दौ , , , , ,श्री , ,

// सं गं मं गं रिं सं निं सं गं रि स नि । स नि रि स, नि ध म नि ध म ग म ग रि स

पा , , , , ,र्थ -, , , सा, , , , , र, , , ,थी - , , , , , दे - , , , , व, , ,

चौत स्वरं

// रिसनिधनिसमधनिसरिनिसगगमसरिसमगमधमगनिधसनिधमग॥

// मगरिस,धमगरिनिधमगसंनिरिस,निधमनिध,मगधम,गरिस॥

चरणं

सं, , रिं सं नि ध नि ध ध म ग म ग ग रि स,,,, सं नि ध ध म ग म ध ध नि ॥

सू , , न , , स , र , , , नी , , , , , ब , , , , ,री , को र्व ले , , , र

1. स, , नि, ,ध, म, ,ग , , रि , स , , नि , , ध , नि स, ग म ध ध नि ॥
2. स, नि ध म ग ध, म ग रि स, नि ध नि स रि स ग , म ध, म ग नि ध म ध नि ॥
3. ध,,नि ,स ध नि सं ध नि ध म ग म नि ध, , म, ग म ध म ग म ग ग रि स नि ॥
4. ध,,नि, स ध नि स रि स नि स म ग म ध, , म , ग निध म स नि ध म ध ध नि ॥
4. सं, , , , , , नि सं रिं नि, ध म ग , रि स , , , , , गं रिं सं नि ध म ग म ध नि ॥

सं नि, ध म ग, म ध म ,ग रि स, निछ ध नि ,स रि नि , स म ग, म ध , , , ॥

सरिस म ग म ध म ग नि ध म ध ध नि म ग म ध, म ग म ध ध नि नि ध म ग, ॥

मगरिसगमध म ग म ध नि सं गं मं गं रिं सं,नि ध नि ध ध म ग रि स म ध नि ॥

पाठगत प्रश्न

1. सभा गान के लिये प्रयुक्त वर्ण क्या कहलाते हैं?

टिप्पणी

2. वर्ण के कौन से भाग में पल्लवी, अनु पल्लवी और मुखतायी स्वरं होते हैं?

3. राग वसंत कौन से मेल की जन्य राग है?

4. हंसधवनि रागं में वर्ण जलजाक्ष के रचयिता का नाम बताइये।

निर्देशित कार्य कलाप

1. संपूर्ण वर्ण का आकारं में अभ्यास करें।

2. सभा गानों में जायें और भिन्न रागों के वर्ण एकत्र करें।

7

कृति-कीर्तन

ये दोनों संगीत विधायें सभा गानं के अंतर्गत आती हैं, जो केवल मंच प्रदर्शन के लिये प्रयुक्त होती हैं। कृति के तीन मूल भाग होते हैं, यथा, पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणं। श्री मुत्तुस्वामी दीक्षितर की कुछ रचनाओं में, जिन्हें समष्टी चरणं कहते हैं, केवल पल्लवी और चरण होते हैं। कृति संगीत विधा में चित्तस्वर, स्वर साहित्य, मध्यमकला साहित्य, सोलकुट्टु स्वर जैसे कुछ सजावटी अंग होते हैं। बाद के संयोजकों द्वारा अधिक कृतियों की रचना होने से इस संगीत विधा का और अधिक प्रचलन हुआ तथा आधुनिक सभा गान के प्रतिरूप का उद्भव हुआ।

आज के समय में, संगीत सभाओं में सर्वाधिक प्रचलित संगीत विधा कृति है। अन्नमाचार्य, भद्रचल रामदास एवं अन्य द्वारा रचित सरल रचनायें जिनमें संगति तथा अन्य सजावटी अंग नहीं होते हैं, कीर्तन कहलाती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात विद्यार्थी:

- राग का ज्ञान बढ़ा पायेगा;
- गमकों को पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर पायेगा;
- एक रचना के सजावटी अंगों के परिचय का वर्णन कर पायेगा;
- मनोधर्म संगीतं को पहचान पायेगा।

7.1 रागलक्षणं

रागं भौली

15वें मेल — मायामालवगौल जन्य

आरोहनं- — स रि$_1$ ग$_2$ प ध$_1$ सं

अवरोहनं- — सं नि$_2$ ध$_1$ प ग$_2$ रि$_1$ स

वादी: गंधारं

संवादी: धैवतं

संचारं

ग प ग रि स, – निछ धछ धछ स रि ग, ,– ग रि ग प ध प,
ग प ध सं नि ध, – ग प ध प ग प ग रि स नि ध स रि ग प ध सं नि ध,
पधसं,, , – धसंरिंगंरिंसंनिध, – निधप,, – धपगपगरि, – स निध, ,– स, , ,

रागं : भौली **तालं. रूपकं**

पल्लवी

श्री पार्वती परमेश्वरौ वन्देचिद बिंबौ लीला विग्रहौ ममाभिष्ट सिद्धये

समष्टी चरणं

आपदा मस्तकालंकरौ आदिमध्यांत रहित करौ
सोपान मार्ग मुख्य धरौ सुखप्रदौ गंधार सधारौ

मध्यम कलां

लोपमुद्रे सरचित चरणौ लोभ मोहादि वरण करनौ
पाप पह पंडित तार गुरुगुहा करणौ भय हरणौ
भाव तनौ

रागं : भौली **रचयिता: मुत्तुस्वामी दीक्षित**
तालः एक **आरोहनं- स रि ग प ध सं**
अवरोहनं- सं नि ध प ग रि स

पल्लवी

// ध, , ,प, , ,ध प ध ग,ध प ,ग प ग रि स, // ,स, स नि ध प ध , // स, , ,स,स रि ग रि ग ग प, //

श्री पा , ,र्व ती प र मे , , सव, रौ , , , व , , न्दे , , , चिदबिंबौ लीला ध ,ध प ,ध, प,ग प ग रि ग प, //

2. ---- वही ---- ग प ध सं, // सं नि ध, ध प, ----वही---- //

विग्रहौ ममाभिष्ट सिद्धये ---- वही ---- ली ला , ,वि , ,ग्रहौ ---- वही ---- //

टिप्पणी

समष्टी चरणं

// ग , ,प, ,ध, , , ,प ,ध प, ग , ,प रि, , , स, रि ग, , , ग , , , ग प रि, ग रि
स, , , सनि ध//

आ , प, दा, , मस्तका , , लं , ,क , रौ , , आ , , दि म, ,ध्यां , त

// ,स रि ,ग प ग रि ग ,प ,ग प ध,प, , , ग, ,प, ,ध, , , ,प,ध प ग ,प ध सं,सं, , ,सं,
,रिं गं रिं गं, रहि त , , , क , , , रौ, सो , , पा,न , , ,मा र्ग मु ख्य, , ध , रौ, ,

// रिं, सं ,नि , ध , , , ,ध प ग, ध, प ग ग प ध प ग प ध प ग, रि, स//

सु ख प्र दौ , , गं , धा र स धा , , रौ,

मध्यमकलां

॥ स,नि, ध ,प ,प ध स रि ग ग प, प ध प प ध ग ग, ग ,प ध स रि स, ॥
लो प मुद्रे सर , चित चर णौ लो भ मो हा , दि, व रण क र नौ

॥ ग, ग ,प ध प ध सं रिं सं रिं गं पं गं रिं सं ,सं सं नि ध प, ग प ग रि ग प ॥
पा , प , पह पं डित तार गुरु गुहा करणौ भय हरणौ भाव तनौ

7.2 रागलक्षणं

रागः मायामालवगौल

15वां मेल

आरोहनं- स रि ग म प ध नि स

अवरोहनं- सं $नि_2$ $ध_1$ प $म_1$ $ग_2$ $रि_1$ स

वादी: – गंधारं

संवादी – निषादं

संचारं

प ध प म ग रि ग, , , – म ग रि, स, – स नि ध ,– स रि ग रि ग,

– ग म प ध नि ध ,प, – ध ध प म ग रि ग म प ध नि, , सं, , – –

सं रिं ,गं मं गं रिं गं, ,– मं गं रिं ,सं, – ध नि सं रिं सं नि ध, प,

–ग म प ध नि सं नि ध प, – ध ध प म ग रि ग, , – म ग रि, स, , ,

रागः मायामालवगौल **तालः** रूपकं

पल्लवी

तुलसीदलमूलच एषं संतोष मुख पूजिंतु

अनुपल्लवी

पलुमरु चिरकालमु परमातमुनि पदमुलनु

चरणं

सरसिरुहन्नगचंपकपटलकुरवक
करवीरमालिकासुगंधरजसुमौलु
धरनीवियोक पर्यायमुधर्मतुमुनिसकेत
पुरवसुनि श्री रमुनि वर त्यागराजनुतुनि

मायामालवगौल **रचयिता त्यागराज**

तालः रूपकं **आरो- स रि ग म प ध नि सं,** **अव- सं नि ध प म ग रि स**

पल्लवी (1) // प ध प,ग म प म ग, मगरि, स, // स रि ग रि ग, प, , प प म ग म,
तुल सी, द ल मू ल च, , , एषं संतोष , मु ख पू ,जिं , , , ,तु

(2) // --वही-- // निधपमग, म ग रि, स, // --वही-- // गमप ध प ध प प म ग म,
तुलसी दल मू, ल, च, , , , एषं संतोष मु ख पू , , , , , जिं , , , तु

(3) //सं नि ध,नि ध प,ध ध प म --वही--//(4) स रि ग म प ध नि सं ,,, //,सं नि ध,नि ध प,ध ध पम // तुल सी, द ल मू ल च, , ,एषं संतोष ,मु ख पू ,जिं, ,तु,,

अनुपल्लवी **(तुलसी)**

(1) // सं नि ध,ध नि सं, // सं रिं , सं रिं सं, रिं सं // (2) --वही-- // सं रिं गं ,मं गं पं मं रिं, सं,
प , लु म , , रु चि र का ल मु प , लु म , , रु चि,र, का , , , ल , मु
// सं रिं सं, सं नि ध, प , ,ध म , ग म प (प ध नि)
प र मा, तमु नि प, द मु ल नु (मु ल नु) (तुलसी)

चरणं

प ध प , प प, म ध प प म, ग म ग म ग रि स स स रि ग , म ग प म ग,
स र सि, रु ह प , न्न, , , ग , चं, प क प , ट , ल , कु र व, क

टिप्पणी

निध सं नि सं रिं संनिनिधप,धपमगम, ग,ममगरि,स, ग म ध प म ग म ग रि स,
क र वी , र मा, ,लि, का,,, सु गं ,ध र , , ज, सु, मौ , लु , , ,

ध सं निधपप ,म ध प पम,गम सं नि ध,ध नि सं,सं रिं सं , सं नि सं रिं सं,
ध र नी वि यो क प र्या ,,,, य मु ध , , , र्म, तुमु नि स, के, , , त

सं रिं गं,मंगंपंमंरिं,सं, सं,सं, रिं सं सं रिं सं, नि ध प , , ध म, प ध नि
पु, र व,,,,सु ,निश्री र, मु नि व र त्या , , गरा, ज, , नु तु नि

(तुलसी)

7.3 रागलक्षणं

रागं: मोहन कल्याणी

65वें मेल मेच कल्याणी जन्य

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ ध$_2$ प म$_2$ ग$_2$ रि$_2$ स

वादी: गंधारं संवादी: निषादं

संचार

ग ,प ध सं नि ध प, , , - प म ग रि स, ,- स रि ग रि स नि ध ,-
ध स रि ग प, म ,ग, रि- ग प ध सं नि ध प, ,- प ध, , , सं , , ,- -
नि ध सं रिं गं रिं सं, ,- ध गं रिं सं नि ध ,प, , - प ,म ग, रि, - -
ग , रि स, ,- -

रागं: मोहन कल्याणी **तालं: आदि**

पल्लवी

सेवे श्री कान्तं वरदं

अनुपल्लवी

देवरादि समूह कृतंतं
दीन पालन परम स्मरकांतं

चरणं

स्यानंदुर पुरमाल दीपं
सारसक्श मकरालि दुरपं

टिप्पणी

भानु शशांक दृशं वसुधापं
पद्मनाभ मवितर्य सुधापं

मोहन कल्याणी **रचयिता: स्वाति तिरुनल महाराज**

तालं: आदि **आरो- स रि ग प ध सं, अव- सं नि ध प म ग रि स**

(1) , , रि ग, स, ,स नि ध , , , ग रि ग , , , , ग , प म ग रि ग, रि,
सेवे श्री कान्तं वरदं --वही-- कान्तं वरदं

(2) --वही-- ग , , , - ग प ध सं नि ध प म
--वही-- कान्तं वरदं

(2) ग रि-रिग, स,,स निध,, ,म ग रि, प म ग, सं नि ध,धगं रिं सं नि ध प म ग रि
, ,-से, वे , श्री , का, , न्तं, , , , व र , , , दं , ,

अनुपल्लवी (सेवे श्री कान्तं)

(1) , , ग, , प ध, सं, , , सं सं सं नि ध, रिं सं, सं, , , , नि ध प म
दे व रा, दि स मू, ह कृ तं तं,

(2) ग --वही-- प ध सं रिं गं ,रिं , सं , , , , नि ध प म
--वही-- मू, ह कृं तं तं,

(3) ग, -ग, , प ध, सं नि ध प सं, सं, प ध सं रिं गं ,रिं, सं रिं गं रिं सं , , ,नि ध प म
, , - दे, व, रा, , , , दि स मू, ह कृ तं , , तं, ,

(1) ग , - ध गं रिं सं, , सं नि ध प , प म ग ,ध, प ग, प म ग रि ग,
, ,-दी न पा , ल न प रम, , स्म र कां, तं, ,

(2) रि,-गं रिंसं नि ध रिं सं निध, प,धपधसं रिं गं रिं सं रिं सं निधपम-ध प म ग रि
, ,- दी न पा , ल न प रम, , स्म र कां, , , ,- तं , ,

(सेवे श्री कान्तं)

चरणं

रि ग, स, , स नि ध ग रि, ग, , , ध, प, ध ध प म ग रि ग ग
- स्या, नं , , दु र पु र , , माल , दी , , , पं

रि,- स, , रि ग, , , प ध, ध, ग प ध सं नि ध प म ध ध प म ग रि ग रि
, , - सा र स क्ष म क रा , , , लि , ,दु र , , ,पं , ,

टिप्पणी

भानु शशांक दृशं वसुधापं : अनुपल्लवी के समान

पद्मनाभ मवितर्य सुधापं

पाठगत प्रश्न

1. सामान्यतया कृति में कितने भाग होते हैं?
2. कृति के जिस भाग में जाति और स्वर साथ होते हैं उसका नाम बताइये।
3. 'तुलसी दल' कृति के रचयिता का नाम बताइये।
4. भौली के जनक राग का नाम बताइये व प्रस्तुत करिये।

निर्देशित कार्य कलाप

1. संगीत सभाओं में जायें और दिये गये तीन रागों में अन्य प्रचलित कृतियों को एकत्र करें।
2. प्रत्यक्ष सभाओं, सी डी, रडियो टी वी कार्यक्रम सुनकर सजावटी अंग युक्त अधिक से अधिक रचनायें एकत्र करें।

8

दिव्यनाम कीर्तन तथा उत्सव संप्रदाय कीर्तन

रचनाओं के ये प्रकार भागवत परंपरा अथवा संकीर्तन भजन पद्धति में मिलते हैं। अपनी रीति गौल कृति ''राग रत्न मालिका'' में संत त्यागराज दिव्यनाम कीर्तन की रचना के उद्देश्य बताते हैं,

''अपनी मुक्ति के एकमात्र साधन के रूप में मैं इन गीतों की रचना करता हूं।'' दिव्यनाम कीर्तन नामक समूह में 78 रचनायें हैं जो सामुहिक गायन के लिये हैं तथा सामान्यतया लंबक शैली, अर्थात् एक पल्लवी और समान मेलडी ढ़ांचे के कई चरणं युक्त हैं। शहाना में 'वंदनमु' और खरहरप्रिय में 'पहिरम' कुछ प्रचलित दिव्यनाम कीर्तन हैं।

उपासना के माध्यम से आराधना की धारणा भारत में प्राचीन परंपरा है। भगवान के आव्हान के लिये कई प्रक्रियायें अथवा उपचार हैं। वे विशेष रचनायें जो इन उपचारों के साथ गाने के लिये निर्धारित हैं, उत्सव संप्रदाय कीर्तन कहलाती हैं। इनकी संख्या 24 है जिनमें केवल भगवान विष्णु की महिमा का वर्णन करने वाला एक पद: चूर्णिका होता है। दिव्यनाम कीर्तनों की भांति ये भी पल्लवी और समान मेलडी युक्त कई चरणों युक्त सरल रचनायें हैं। यदुकुल कामभोजी में हेच्चरिकग रार' जैसी कुछ रचनायें इसका अपवाद हैं, जिनमें पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण, तीन भाग होते हैं। कुरिन्जी में सीता कल्याण, मध्यमवती में नागुमोमु कुछ प्रचलित उत्सव संप्रदाय कीर्तन हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी:

- कीर्तनं की संरचना का वर्णन कर पायेग;
- भक्ति की अभिव्यक्ति का वर्णन कर पायेगा;
- कीर्तनं को पहचान पायेगा।

टिप्पणी

8.1 दिव्यनाम कीर्तन

रागं: सहाना

सहाना 28वें मेल हरिकांभोजी की जन्य राग है

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ म$_1$ प म$_1$ ध$_2$ नि$_1$ सं

अवरोहनं- सं ध$_2$ प म$_1$ ग$_2$ म$_1$ रि$_2$ स

वादी: ऋषभ

संवादी: धैवत

संचारं रि ग म प - प म ग म रि - रि ग रि स -

रि स नि स ध - ध नि स रि - रि ग म प म ध नि - रि̇ सं̇ नि̇ सं̇-

नि रि̇ सं̇ नि सं̇ ध- नि̇ ध̇ पं̇- प रि- रि ग म प म ध स नि ध प म

ग म रि- ग रि स

रागं: सहाना

तालं: आदि

पल्लवी

वंदनमु रघु नंदन सेतु
बंधन भक्त चंदन राम

अनुपल्लवी

श्रीतम नातो वतम ने
भे दम इति मोदम

चरणं

1. श्री राम ब्रि चरम ब्रोव
   बरम राय बरम राम
2. विंतिनी नम्मु कोंतिनी शर
   नंतिनी रमंतिनी राम
3. ओदनु भक्ति वीदनु नोरुल
   वेदनु नीवदनु राम

टिप्पणी

4. कम्मानी विदमिम्मानी वरमु
   कोम्मानी पलुक रम्मानी - राम

5. ज्ञाम नी कदयम इक
   हेयम मुनिगेयम राम

6. क्षेममु दिव्य धाममु नित्य
   नेममु राम नमामु राम

7. वेगर करुण सागर श्री
   त्यागराज हृदय जर राम

रागं: सहाना **तालं: आदि**

रचयिता: त्यागराज

आरोहनं- स रि ग म प म ध नि स

अवरोहनं- सं ध प म ग म रि स

पल्लवी

(1) ॥ ,सरिग, गरिरि,रि,,रि, । रि , रि , ग , म । प , , , , , प , ॥
वं - - द न मु र घु नं- द न से
॥पमम, पध, पमगमरि,,रि, । रि, ग रि रि म ग रि । स , य प म ग म ॥
तु - बं - - ध न - भक्त चं - - द न रा

(2) ॥ रि स --वही-- रि , रि , नि ध । प ध प, नि रि ॥
म- र घु नं- - द न से
॥ सरि नि स प,, गमरि,,रि, । रि, ग रि रि म ग रि स, य प म ग म ॥
तु - बं - धन - - भक्त चं - -द न- -

(3) ॥ रि स --वही-- । --वही-- ॥
॥ --वही-- रा, । नि ध प ध प म प म ग म ग रि रि ग ग रि ॥
भक्त -- चं--द--न--रा--
॥ स नि

(1) ॥ य नि , , , , ध , प , , प , , म प म , ध नि स , स नि ध स , य य य ॥
श्री त म ना तो - - व - - त - म - ने

टिप्पणी

॥ य नि, रि , स , नि स ध , प स नि ध प, रि ग म प म ग म रि, रि ग ग रि ॥
भे - द म - - इ - ति - मो - - द म - - रा- म
॥ स नि ध रि स स नि , , , ध, य प, य प ध प ध म प म , --वही--
श्री त - म ना - - तो - -
॥ य नि स रि ग ग नि नि स ध , ध स नि ध प , रि ग म प ध प
भे - - द म - - इ - ति - मो - - द -
प म म ग रि ग ग रि ॥ स
- - म - - रा- म-

शेष चरण इसी प्रकार

8.2 उत्सव संप्रदाय कीर्तन

रागं मध्यवती

22वें मेल मध्यवती की जन्य राग

आरोहनं- स $रि_2$ $म_1$ प $नि_1$ सं

अवरोहनं- सं $नि_1$ प $म_1$ $रि_2$ स

वादी: रे

संवादी: प

संचारं - रि- रि म प म रि स - नि स रि स नि प- नि स रि
रि म प- म नि प प म म रि स- रि म प नि - रि स नि स- नि प-
नि स रि - रि म प म रि स- नि स रि स नि प- म नि प प म रि-
रि रि म म नि नि रि रि स नि प म रि- रि स नि प नि स

रागं मध्यवती **तालं: आदि**

रचयिता: त्यागराज

पल्लवी

नागमोमु गलवानी न मनोरहुनी
ज गमेलु शूरुनी जनकी वरुणी

टिप्पणी

चरणं-I

देवादि देवुनी दिव्य सुंदरुनी

श्री वासुदेवुनी सेत रघुवनी

चरणं-II

सुगनान निधि नि सोम सूर्य लोचनुनी

अज्ञान तममु अनचु भास्करुनी

चरणं-III

निर्मला करुणी निखी तग हा हरुणी

धर्मादि मोक्षंबु दया चेयु घनुनी

चरणं-IV

बोधतु पलुमरु पूजिन्चुनी न-

राधिन्तु श्री त्यागराज सन्नुतिनी

पल्लवी

(1) ॥ नि स , रि , रि रि , रि रि , रि म रि स ,

ना ग मो मु ग ल वा - - नी

स , रि , स नि प , नि स रि स रि , ॥

न म - नो ह रु नी -

॥ रि म , प , , प , म प म रि रि म रि स

ज ग मे लु शूरु नी - -

नि स रि , म , म रि रि म प रि म रि स ॥

ज - न - की वरुणी - -

(2) ॥ नि स रि स रि स रि, रि प म रि रि म रि स

नाग मो - मु गलवा - नी

स , , स रि स नि प , नि स रि स रि , ॥

न - म - नो ह रु नी -

--वही-- --वही--

शेष भाग इसी प्रकार

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. त्यागराज स्वामी किस कृति में दिव्यनाम कीर्तन के विषय में बताते हैं।
2. वे रचनायें क्या कहलाती हैं जो भगवान को अर्पित उपचारों का वर्णन करती हैं?
3. किन्हीं दो उत्सव संप्रदाय कीर्तनों का उल्लेख करें।
4. सहाना किस मेल की जन्य राग है?

निर्देशित कार्य कलाप

1. कीर्तन की स्वर लिपि के अनुसार सहाना के संचार को अपने आप लिखें।
2. उनके राग, ताल और उपचारों के उल्लेख युक्त साहित्य सहित सभी उत्सव संप्रदाय कीर्तनों को एकत्र करें।

9

तरंग

नारायण तीरथर द्वारा रचित श्री कृष्ण लीला तरंगिनी कथा और संवाद, क्रिया, नृत्य और संगीत युक्त नाट्य काव्य का मिश्रण है। इसमें श्री कृष्ण के जन्म से लेकर रुक्मिनी के साथ विवाह तक श्रीमद भागवतं के दशम स्कन्द में वर्णित भगवान कृष्ण की लीला बताई गई है। इस कार्य में दारु, गद्य, पद, श्लोक और गीतं (कीर्तन) युक्त 12 तरंगं हैं। तरंग का अर्थ है लहर और श्री कृष्ण लीला तरंगिनी का सरल अर्थ है ''श्री कृष्ण की क्रीड़ाओं की नदी''। इस कार्य में 156 गीतं हैं। तरंगं भाव, राग और ताल जैसे सभी महत्त्वपूर्ण तत्त्वों से युक्त होते हैं। नारायण तीरथर ने अपने समय में प्रचलित रागों का प्रयोग किया है और देशाक्षी, गौरी और मंगल कापी जैसे कुछ अपूर्व रागों का भी प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयोग की गई तालें धरुव, रूपकं, झंपा, मथ्य, अता इत्यादि हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी

- तरंगं की संरचना का वर्णन कर पायेगा
- अन्य संकीर्तनों के मध्य अंतर की तुलना कर पायेगा
- उक्त रचना से संबन्धित विशेषताओं का अवलोकन कर पायेगा

रागलक्षणं

रागं: बिलहरी

29वें मेल धीर शंकराभरणं जन्य

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ ध$_2$प म$_1$ ग$_2$ रि$_2$ स

औडव संपूर्ण रागं

टिप्पणी

संचारं

ग प ध, प, – – प प म ग रि रि ग, रि, – – ग ग ग, , , रि ग प म ग रि

स नि ध, – स रि ग ग रि ग प, य – ग प ध, सं, , , – ध, सं रिं गं, , ,

स रिं गं रिं सं नि ध, – – ध गं रिं गं सं , पं मं ग रिं सं नि ध, – –

ध रिं, सं नि ध, – – ध सं, नि ध, प , ध प म ग रि ग , रि – –

रि प , म ग रि, ग रि स नि ध , – स , , – –

रागः बिलहरी **तालः आदि**

पल्लवी

पूरय मम कामं गोपाल

अनुपल्लवी

वारम वारम वंद नमस्तुते
वारिज दल नयन, गोपाल

चरणं-I

मन्येत्वं इह माधव दैवं
माया स्वीकृत मानुष भवं
धन्यैरद्रुत तत्व स्वभावं
दातरं जगतां अति वैभवं

चरणं-II

बृंदावन चर भर्हवतंश
भक्त कुन्ज वन बहुल विलास
संद्रानंद समुद – गीर्न हस
संगता केयुर समुदिता दास

चरणं-III

मत्स्य कूर्मादि दश महित अवतार
मदानुग्रह कर मदन गोपाल
वात्सल्य पालित वर योगी बृन्द
वर नारायण तीरथ वर्धित मोद

टिप्पणी

रागः बिलहरी

तालः आदि

रचयिता नारायण तीरथर

आरोहनं- स रि2 ग2 प ध2 सं

अवरोहनं- सं नि2 ध2 प म1 ग2 रि2 स

पल्लवी

(1) य , ग , , प ध , स , स , स नि ध , स । , ; ; प , । ध , प , प प म ग ॥

पूरय मम का - - मं गो पा - ल । - -

॥ रि , ग प , म ग , रि , स, स नि ध , । स , य य प , । ध , प , प प म ग ॥

- पू - र य म म का - - मं गो पा - ल - -

(2) ॥ रि, ग य पध, स, स, स नि नि ध । ग रि, य य ध रि । स नि ध प ध प म ग ॥

पू र य ममका - - म गो - पा - - ल - -

॥ रि, ग ध, प म ग, , रि, ग रिस स नि ध स ; ; ; प, । ध ध ध प ध प म ग ॥

- पू - र - य म म - - का - - मं गो पा - - ल - -

(3) ॥ रि , पूरय मम स नि नि । ध , स , ; ; । ; ; ; ; ॥ का - - -

अनुपल्लवी

(1) ॥ ; प ध प म ग रि ग , प , ; ध , ; । ; , सं , सं सं , सं , , नि ध प ध , ॥

वा - रं - - वा रम वंदन म - स्तुते

(2) ॥ ; म ग , प ध , सं , ; सं , सं , /

वा - रं - - वा रम वंदन म - स्तुते

(1) ॥ ; , सं , सं सं , सं , सं , प , प , । ध , सं , ; प , । ध , प , पपमग ॥

वारिज दल नय न - गो पा -ल-

-, वारं वारं वंदनम स्तुते

(2) ॥ ; , ध रिं सं सं , स , स , प , प , । ध रिं रिं सं स , प , । पाला

वा -रिज दल नय न - - गो (पूरय)

टिप्पणी

चरणं

(1) ॥ ; प , , प , , प , ; प , प , ; प , ध सं ध प , ध प , ध प म ग रि, ॥
मन्ये त्वं इह मा - धव दै - वं
॥ ; ग प , म ग , ग रि ग रि स नि़ ध , स रि , ग ग , प , ; प , ; ॥
मा - या स्वी - - कृत मा - नुष भ वं

(2) ॥ म - -न्ये त्वं इह माधव दैवं ॥
॥ माया स्वीकृत मानुष भवं ॥
॥ ; म ग , प ध , सं , , , सं , सं , ; रिं , , रिं सं सं , , नि ध प ध ,
ध - न्यै र द्रुत त त्व स्व भा - वं - -
॥ ; सं , , सं , , सं , ; प , ध , ध रिं सं नि ध , प , ध प म ग रि स रि ग
दा त रं जग तां - -अति , वै - -भ - -
॥ प ध सं
वं - - (पूरय)

शेष चरणं इसी प्रकार है।

पाठगत प्रश्न

1. कुल कितने तरंग हैं।
2. कृष्ण लीला तरंगिनी के गीतों का क्या नाम है?
3. बिलहरी कौन से मेल की जन्य राग है?

निर्देशित कार्य कलाप

1. कृष्ण लीला तरंगिनी से संबन्धित अधिक से अधिक गीतं एकत्र करें।
2. कृष्ण लीला तरंगिनी और गीत गोविंदं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करें और एक टिप्पणी तैयार करें ।

10

अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पुरंदर दास के पद

अन्नमाचार्य और पुरंदर दास समकालीन माने जाते हैं और वे दोनों तीर्थ यात्रा के समय मिले एवं उन्होंने आपस में संगीत के अनुभवों का आदान -प्रदान किया। तथापि, इन दोनों प्रसिद्ध वाग्गेयकारों की रचनाओं को समान आदर के साथ रखते हैं। पूर्ववर्ती की रचनायें प्रचार में संकीर्तन कहलाती हैं जो तेलुगु भाषा में रचित हैं य जबकी पश्चातवर्ती की रचनायें प्रचार में पदगलु कहलाती हैं जो कन्नड़ भाषा में रचित हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी:

- रचयिताओं का संगीत के प्रति दृष्टिकोण पहचान पायेगा
- रागों और तालों के प्रयोग का वर्णन कर पायेगा
- रागं लक्षणं पहचान पायेगा
- रागं तिलंग की स्वर लिपि लिख पायेगा

राग लक्षणं

मुखारी 22वें मेल खरहरप्रिय की जन्य राग है।

आरोहनं- स $रि_2$ $म_1$ प $नि_1$ $ध_2$ सं

अवरोहनं- सं $नि_1$ $ध_1$ प $म_1$ $ग_1$ $रि_2$ स

टिप्पणी

भाषांग राग तथा अन्य स्वर शुद्ध धैवत

वादी स्वर – ऋषभ

संवादी स्वर – धैवत

संचारं

रि म प – म ध प म ग रि – प म ग रि स – नि ध प ध स रि म –
म ग रि म प नि ध प – नि ध स, – स रि प म ग रि स , –
नि ध प – रि म प, – म ध प म ग रि – प म ग रि स , – नि ध स –

रागं : मुखारी **तालः आदि**
(सप्तगिरि कीर्तन) **रचयिता: अन्नमाचार्य**

पल्लवी

ब्रह्म	कदिगिन	पादमु	
ब्रह्ममु	तनेनी	पादमु	

चरणं-I

चेलगी	वसुधा	गोलिचीना	नी	पादमु
बालि	ताल	मोपिना		पादमु
तालगक	गगनमु	तन्निना		पादमु
बलरिपु	गाचिन	पादमु		

चरणं-II

कामिनि	पापमु	कदिगिन	पादमु	
पामु	तलनिदिन	पादमु		
प्रेमपु	श्रीसति	पिसिकेदि	पादमु	
पमिदि	तुरगपु	पादमु		

चरणं-III

परमु	योगुलकु	परिपरि	विधमुल	
परमो	सगेदि	नी	पादमु	
तिरु	व्यंकट	गिरि	तिरमनि	चूपिन
परम	पादमु	नी	पादमु	

टिप्पणी

रागं : मुखारी

तालं : आदि

रचयिता: अन्नमाचार्य

पल्लवी

(1) ॥ ;नि,,ध ससस रिरि ।, रिगरि ।स,,, ॥
ब्रह्म कदिगिन पा-द मु

(2) ॥ ,सरि नि,, ध स,रिस रिमपनि ।धप पम गरि ।स,,, ॥
ब्रह्म क दि गि न - पा दमु

। ; य,रि,म म,प,, ध प मपधप मपधप पमगरि
ब्रह्म मु त ने नी पा - - द मु - - - -

(3) ॥ स , , रि नि , ध स, रि स रि म प नि ध प प म ग रि रि रि ग रि स ,
ब्रह्म कदि गि-न - - पा - द मु - -

, , , रि , म म , प , , नि नि ध ध, स, सनिधप मप ध प प म ग रि
ब्रह्ममु त - ने नी पा - द मु - - - -

(4) ॥ स , , रि नि , ध --वही-- --वही--
ब्रह्म

॥ , --वही-- स रि प म ग रि स रि स नि ध प प म ग रि
पा - - - - - द मु - - - - -

स , ,

चरणं-I

; म म , म म म म , ग रि , ग ग म, प , ध प
चेलगी वसुधा गोलि चीना नी पादमु

; रि म , प ध , नि , नि नि प ध रि स नि ध ध प , ,
बालि ता ल मोपिना पा द मु

ध प --वही-- --वही--

, रि म , प ध , नि नि नि नि स ध रि स ग रि स नि ध प नि
बालिताल मो - पिना पा - - - - द मु

टिप्पणी

(1) , , नि ध , स स , रि रि ग रि रि रि ग रि स , , ग रि नि ध
तालगक गगनमु तन्निना पा - - दमु

, नि ग रि स नि ध ध प म प ध प म प ध प प म ग रि
बलरिपु गाचिन पा - द मु, , , - - - -

(2) स , नि ध , स रि स रि रि , प म ग रि --वही--
ताल ,गक गग नमु
--वही-- --वही--

रागं तिलंग

आरोहनं- स $ग_2$ $म_1$ प $नि_2$ सं

अवरोहनं- सं $नि_2$ प $म_1$ $ग_2$ स

औडव- औडव राग

वादी: गंधार

संवादी: निषाद

संचारं ग म प नि सं प- म ग- स ग म ग स
नि स ग म प म ग म प नि सं प - म प नि सं- नि स ग म ग
स ग म ग स , - सं नि प म ग - ग प म ग स- स नि प नि स

रागं तिलंग **तालं: आदि (तिस्रगति)**

रचयिता: पुरंदर दास

पल्लवी

तारक बिंदिगे ना नीरिगे नोगुवे
तारे बिंदिगेया
बिंदिगे ओदे दारे ओंदे कसु तारे बिंदिगेया

चरणं-I

राम नाम वेंबो रसवुल्ला नीरिगे
तारे बिंदिगेया
कामिनियारा कूडे एकंत वदेनु
तारे बिंदिगेया

चरणं-II

गोविंद एंबो गुनवुल्ला नीरिगे
तारे बिंदिगेया
आवव परियाली अम्रितद पनके
तारे बिंदिगेया

चरणं-III

बिंदु माधवन घत्तके होगुवे
तारे बिंदिगेया
पुरंदर विट्ठलगे अभिषेक मादुवे
तारे बिंदिगेया

10.2 रागः तिलंग

तालः आदि (तिस्रगति)

आरोहनं- स ग म प नि सं **रचयिताः पुरंदर दास**

अवरोहनं- सं नि प म ग स

पल्लवी

(1) ॥ सगम पपप निपनिपपम मप,निप मग
तारक बिंदिगे ना नीरिगे नो गु-वे-
। गमपनस, निपनिपम । ग , , मपमप गमगम स ॥
तारे - बिंदिगे य । । ----

(2) ॥ --वही--
गमपनस सरससस निपनिपम । ग,, मपमप गमगम स ॥
ता रे - - बिंदिगे या । ----
॥ गगम पनन,नप न न , संन, सं,,
बिंदिगे ओदे दारे ओंदे क सु
नसंनसंप, प, ननपम । प , , सनपमगस ॥
ता - रे बिंदिगे या । -

टिप्पणी

चरणं-I

॥	गमर	ससस	ननस,ग	गमपपप,		
	रा	मना	मवेंबो	रसवुल्ला	नी –	–रिगे
	मम न	ननसंनप,	। प , ,	, , ,	॥	
	ता रे	बिंदिगे	या			
॥	गमपन प,	नन नन	सं सं सं सं	ग नि	सस ।	
	का मिनि	याराकूडे	एकंत	वदेनु		
	नसनसप,	प,न नपम	। प , ,	सं न प म ग स ॥		
	ता – रे	बिंदि – गे	या	।		

शेष चरणं इसी धुन में गाये जायेंगे

पाठगत प्रश्न

1. अन्नमया कृति के कौन से समूह में ब्रह्मकदिगिन पदमु आता है?
2. राग मुखारी कौन से मेल की जन्य राग है?
3. राग तिलंग वर्ज राग की कौन सी श्रेणी में आती है?

निर्देशित कार्य कलाप

1. प्रत्यक्ष संगीत सभाओं में जायें और विभिन्न कलाकारों की सी डीध कैसेट सुनें तथा अधिक से अधिक अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पदगलु एकत्र करें।
2. दोनों रचयिताओं की रचनाओं का विशलेषण करें और सांगीतिक और साहित्यिक जीवन पर टिप्पणी तैयार करें।

11

भजन

भजन सुगम प्रकार की रचनायें होती हैं जो सामान्यतया सभा के अंत में भक्ति भावना सहित गाई जाती हैं। ये पदम, जवाली आदि जैसी अन्य सुगम संगीत रचनाओं से भिन्न हैं। ये रचनायें विषय के साथ ही साथ राग और ताल की दृष्टि से अधिक सरल होती हैं। भजनों की रचनायें सामान्यतया सिंधुभैरवी, देश, बिहाग इत्यादि जैसी देश्य रागों में समकालीन रचयिताओं द्वारा रचित होती हैं। यह आवश्यक नहीं कि सभी भजनों का संगीत रचयिता द्वारा स्वयं दिया गया हो। कई भजनों में संगीत बाद के संगीतज्ञों द्वारा बाद में जोड़ा गया है। इस श्रेणी में मीरा, कबीर, सूरदास एवं अन्य के भजन सम्मिलित है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी

- संगीत की अद्भुत मेलडी का वर्णन कर पायेगा;
- सरल साहित्य और मधुर संगीत का वर्णन कर पायेगा;
- सूचिबद्ध भजन का ताल सहित उच्चारण कर पायेगा।

राग लक्षणं

रागं : कानडा

22वें मेल खरहरप्रिय जन्य

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_1$ म$_1$ प ध$_2$ नि$_1$ सं

अवरोहनं- सं नि$_1$ प म$_1$ प ग$_1$, म$_1$ रि$_2$ स

टिप्पणी

जातिः वक्र षाडव

वादीः रि

संवादीः ध

संचारं

रि स रि प ग, , , रि ,ग म, पम ग ग म रि, रि स नि स नि धनि ध स रि प ग,,
मध,ध, मधनिसं प, निनिपम गमधनि, , स, , , स, रि, ग, , , म, रि, , स, ,
निरिंसंनि धनि,ध,मध,नि,रिंसंप,, मध,नि,प,मप,ग,,,गम,रि,रिसनिस,निधनि,ध,नि,,,स,,,

रचना का साहित्य

पल्लवी

अलय पायुदे कन्न एन मनमिह
अलय पायुदे उन आनंद मोहन वेणुगानमदिल

अनुपल्लवी

निलय पेय्य रादु सिलै पोलवे निन्द्रै
नेरमावतरियमले मिक विनोदमक मुरलीधर एन मानं

चरणं

तेलिंत निलवु पत्तपगल पोल एरियदु
दिक्कै नोक्कि एन इरु पुरुवं नेरियुदे
कनिंद उन वेनु गानं कात्रिल वरुकुदे
कंगल सोरुगी ओरु विधमै वरुकुदे

मध्यम कला साहित्यं

कादित मनत्तिल ओरुति पदत्तै एनक्कु अलिल्तु मगिज़्तव
ओरु तनित्त वनत्तिल अनैतु एनक्कु उनर्ची कोदुतु मगिज़्तव
अलैकदल अलैयिनिल कतिरवन इनैयिना कलयेन
कदरि मनमुरुगि नान असैक्कवो इदैमदरुद नी कलिक्कवो
इतु तगुमो इतु मुरैयो इतु धरमं तानो
कुसलुतिदं पोसुतदिदं कुसैगल पोलवे मानतु वेदनै मिकवोदु

टिप्पणी

रागं : कानडा

तालं : आदि

रचयिता: ओत्तुकदु व्यंकट सुबेर

पल्लवी

1) ‖ x 1 2 3 | x v | x v ‖
ऩिसरि,, प , पमग ,,,ग, | गमपरि,, रि,,, | ;गम, रिस , ‖
अलय पायुदे -- का | कन्न -- एन | मनमिह

‖ x 1 2 3 | x v | x v ‖
ऩि स , . ध,, ऩि, स,,,, ,,,,,, | ,,,, ,,,, | ,,,, ,,,, ‖
अ लय पा यु दे

2) अलयपायुदे कन्न एन मनमिह

‖ ऩिस, ध़,,ऩि, स,,,,, प, | सं , सं सं प, पप मनिप ग , म रि स ‖
अ लय पा यु दे उन आनंद मोहन वे वेणु गा नमदिल

3) ‖ निस, रि, नि , , निनिपमग;;| ध ,| ध , , निरिसप , | ; गम, रिस,
अल|य पायुदे - - कन्न एनमनमिह|

‖ निस,ध,,नि, सं,,,, , सं रिं | रिंमंरिंसं निनिनिप|मनिपग, मरिस‖
अ|लय पा यु दे उन - आ- नंदमोहन वेणुगानमदिल‖

अनुपल्लवी

1) x 1 2 3 x v x v
॥ ,, गम, ध नि , स,,,,, सं,,, सं सं, सं सं , सं , , नि रिं सं प ,
निलयपेय्य रा दु सिलै पोलवे नि-न्द्रै

2) x 1 2 3 x v x v
॥ ,, ग म , ध नि , सं रिं गं , रिं , सं ,,, ग म , रि स , स ,, नि रि स प ,
निलयपेय्यरा --- दु सिलैपोलवे वे - निन्द्रै

॥ ग, मधं , निससनिरिसप , पपम । ध नि स प, प प म । निधपमगमरिस ॥
ने रमाव तरि य - म लेमिकवि नो-दमकमुर । ली - धर एन -मानं

टिप्पणी

चरणं

॥ , , ध नि, प प , प , प , , म प , । म प , प,,म, । प , नि ध प म ग, ॥
ते लिंत निल वु पत्त पगल पोल ए रि य दु – –

ध नि , सं , प , प , --वही-- --वही-- पमग

॥ ,, ते लिंत निलवु पत्त पगल पोल । प ,निध रिय- दु – ॥ रिय- दु –

॥ ग,ग, मपरिरि, स,,निस, । रि रि, रि, , स , । रि , नि ध प म ग , , , ॥
दि क्कै नो – क्कि एन इरु पुरुवं ने रियु – दे –

॥ , , ग म , ध नि , स , , , स , स , । , , स , , स स , / सनिरिसप,,, ॥
कनिंद उन वे नु गा नंकात्रिलव रु – कु – दे

॥ , , ग म , ध नि , स रि ग , रि , स , । , , गम,रिस,सनिरिसप,,, ॥
कनिंद उन वे – – नु गानं का – त्रिलव रु–कु– दे

॥ ध,, ध, , म , ध, ध , , ध ध , । नि स , प , , म, प, । निधपमग,,, ॥
कं गल सोरुगी ओरु विध मैव रु कु – दे –

मध्यमकलां

॥ सस , सपप , पमम , मधध , धमध , नि सं नि , प म ध , नि सं, नि सं ॥
कादित मनत्तिल ओरुति पदत्तै एनक्कु अलिल्तु मगिज्त्तव ओरु

॥ गग, मरि स , स नि रि , स नि प , प म ध , नि स नि , पमनि,पग,,, ॥
तनित्त वनत्तिल अनैतु एनक्कु उनर्ची कोदुतु मगिज्त्तव

॥ ससससपपपम मममधधधध मधधनिसनिपममध , नि सं , , , ॥
अलैकदल अलैयिनिल कतिरवन इनैयिना कलयेन कलित्तव

॥ संरिरिंसंरिरिरिरिरिं , संरिं, पंगं , गंगंमं रिं , रिं सं सं नि , ध नि , रि स , ॥
कदरि मनमुरुगि नान असैक्कवो इदैमदरुद नी –कलिक्कवो

॥ मगमधध,,, मधनिसंसं ,,, रिं रिं सं रिं रिं , रिं सं रिं पं गं , , , गं गं ॥
इ तु तगुमो इतुमुरैयो इतुधरमंता – – नो कुस

॥ गं मं रिं सं , सं सं सं नि रि स प , पपपमधनिस, निपपनिनिपमग म रि स ॥
लु – तिदंपोसुत – दिदं कुसैगल पो – लवेमानतु वे–दनै मिकवोदु

पाठगत प्रश्न

1. कानडा किस मेल की जन्य राग है?
2. 'अलय पायुदे' भजन के रचयिता कौन हैं?
3. यह भजन किस भाषा में है?

निर्देशित कार्यकलाप

1. भजन की स्वर लिपि के आधार पर राग कानडा के संचार को स्वयं लिखें।
2. प्रत्यक्ष संगीत सभाओं, रडियोधटी वी कार्यक्रम, सी डीध कसेट के माध्यम से इस राग की अधिक से अधिक रचनायें एकत्र करें।

कर्नाटक संगीत में माध्यमिक कोर्स का पाठ्यक्रम

भूमिका

वैदिक युग से अध्ययन की अन्य शाखाओं के साथ संगीत को एक विषय के रूप में आवश्यक माना गया है। किसी देश और उसके लोगों का स्वभाव उनकी कला और संस्कृति के द्वारा झलकता है। यद्यपि संगीत का विकास वैज्ञानिक रूप से हुआ है, उसमें कला की भांति शालीन और गंभीर प्रकृति है। कला से अधिक यह कालांतर के संचार के रूप में विकसित हुआ है, जिसे भविष्य की पीढ़ियों तक उनके लाभ के लिये पहुँचाना आवश्यक है। यह केवल प्राथमिक और उच्च दोनों स्तरों पर एक सुनियोजित और व्यावसायिक शिक्षण पद्धति के द्वारा ही सम्भव है।

उद्देश्य

इस कोर्स का उद्देश्य :

- प्रदर्शनकारी कला के क्षेत्र में ज्ञान और कौशल बढ़ाना है;
- संगीत के लिये समीक्षात्मक समालोचना उत्पन्न करना है;
- भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति संपर्क बढ़ाना है;
- स्वर, श्रुति, गमक, राग और ताल जैसी मूल अवधारणाओं की व्याख्या करना है;
- संगीत की विभिन्न धाराओं अथवा प्रकारों, जैसे शास्त्रीय तथा गैर-शास्त्रीय में अंतर करना है।

पात्रता

कोर्स के लिये पात्रता:

- कक्षा VIII/समकक्ष परीक्षा का उत्तीर्ण होना तथा
- उम्र की कोई रोक नहीं

वितरण प्रक्रिया

संगीत ध्वनि संबंधित विषय है अत: इसका अध्ययन मौखिक परम्परा द्वारा होना चाहिये। विषय की वितरण प्रक्रिया न केवल श्रव्य कैसट और सी.डी. के माध्यम से अपितु डी.वी.डी. के माध्यम से भी होना चाहिये क्योंकि कर्नाटक संगीत के कई पक्ष दृश्य प्रक्षेपण के द्वारा सीखे जाने चाहिये।

सीखने के घंटे

कोर्स सीखने के 240 घंटे होंगे।

समय अवधि

कोर्स की समय अवधि माध्यमिक स्तर के 100 अंक युक्त स्वतंत्र विषय के रूप में एक साल रहेगी।

परीक्षा प्रणाली

कुल अंक : 100

थ्योरी : 40 अंक प्रैक्टिकल : 60 अंक

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

उक्त कोर्स को दो भागों में विभाजित किया गया है। (क) थ्योरी (सिद्धांत) तथा (ख) प्रैक्टिकल (प्रयोगात्मक)

सिद्धांत भाग का एक मोड्यूल है

- सामान्य संगीत शास्त्र

प्रयोगात्मक भाग के दो मोड्यूल हैं

- कर्नाटक शास्त्रीय संगीत
- कर्नाटक उप शास्त्रीय संगीत

थ्योरी तथा प्रैक्टिकल भागों के प्रत्येक मॉड्यूल के लिये अंक तथा अध्ययन के लिये निर्धारित न्यूनतम घंटे इस प्रकार हैं:

पाठ सं.	पाठ आधारित मॉड्यूल विस्तार	न्यूनतम अध्ययन घंटे	अंक	
			प्रत्येक पाठ	प्रत्येक मॉड्यूल
	थ्योरी			40
	मॉड्यूल-1 सामान्य संगीत शास्त्र			
1.	भारतीय संगीत को कर्नाटिक संगीत के रूप में उत्पत्ति एवं विकास तथा उसकी उन्नति	10 घंटे		
2.	कर्नाटक संगीत के मूल सिद्धांत	10 घंटे		

3.	प्रमुख रचयिताओं की जीवनियां	10 घंटे		
4.	अभ्यास गान का परिचय	10 घंटे		
5.	सभा गान का परिचय	15 घंटे		
6.	संगीत वाद्यों का वर्गीकरण	15 घंटे		
7.	कर्नाटक संगीत की स्वरलिपि पद्धति	10 घंटे		
	कुल	**80 घंटे**		
	प्रैक्टिकल			40
	मॉड्यूल-2 शास्त्रीय कर्नाटक संगीत			
1.	सरली वरीसा, जग्गु स्थायी वरीसा और हेच्चु स्थायी वरीसा	25 घंटे		
2.	जनता और दातू वरीसा	10 घंटे		
3.	अलंकार	15 घंटे		
4.	पिल्लरी गीत तथा संचारी गीत	15 घंटे		
5.	जाति स्वर तथा स्वरजाति	15 घंटे		
6.	वर्ण	20 घंटे		
7.	किर्तना/कीर्ति	20 घंटे		
	कुल	**120 घंटे**		
	मॉड्यूल-3 उप शास्त्रीय कर्नाटक संगीत			20
8.	दिव्यनाम संकीर्तन तथा उत्सव संप्रदाय	10		
9.	तरंग	10		
10.	अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पुरंदर दास के पद	10		
11.	भजन	10		
	कुल	**40 घंटे**		
	कुल	240 घंटे		100

कोर्स विवरण

प्रैक्टिकल **3 घंटे** **60 अंक**

मॉड्यूल II : शास्त्रीय कर्नाटक संगीत

दृष्टिकोण:

भारतीय संगीत के अंधकार युग के पश्चात् विजयनगर साम्राज्य के गढ़ में कर्नाटक संगीत पुनस्थापित हुआ। पुरन्दर दास, जिन्होंने अलंकार, सरली वरीसा, सूलादि, गीत इत्यादि जैसे प्रारंभिक अभ्यासों की रचना करके संगीत शिक्षण की प्रक्रिया को व्यवस्थित किया, उन जैसे कई रचयिताओं द्वारा इसे सींचा एवं विकसित किया गया तथा अन्नमाचार्य, क्षेत्रज्ञ, नारायण तीर्थ एवं अन्य रचयिताओं के योगदान द्वारा ये और अधिक विकसित हुआ। संगीत त्रिमूर्ति, अर्थात् मुत्तुस्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री तथा त्यागराज के समय कर्नाटक संगीत अपने शिखर पर था, जिन्होंने अपनी संगीत विद्या कृति के माध्यम से सम्मिलित रूप से इस संगीत का प्रचार किया। बाद के काल में वर्णों, पदम, पदम, जावली और तिल्लाना इत्यादि जैसी अन्य रचनाओं ने भी श्रोताओं के हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया।

पठ-1 : सरली वरीसा, तग्गु स्थायी वरीसा और हेच्चु स्थायी वरीसा का संक्षिप्त परिचय (विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर 3 सं गा पायेगा)

पठ-2 : जनता और दत्तु वरीसा (विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर एक जनता तथा एक दत्तु वरीसा में से कोई दो रचनायें गा पायेगा)

पठ-3 : अलंकार (विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर कोई दो अलंकार गा पायेगा)

पाठ-4 : पिल्लरी गीत तथा संचारी गीत (विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर प्रत्येक विधा की कोई एक रचना गा पायेगा)

पाठ-5 : जाति स्वर तथा स्वरजाति (विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर प्रत्येक विद्या की कोई एक रचना गा पायेगा।

पाठ-6 : वर्ण

(विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर कोई एक वर्ण गा पायेगा)

पठ-7 : कृति/कीर्तन

(विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर कोई एक कीर्तन गा पायेगा)

मॉड्यूल III : उप शास्त्रीय कर्नाटक संगीत

दृष्टिकोण:

कर्नाटक संगीत भी संगीत श्रोताओं के लिये संगीत, की उत्कृष्ट रचनायें प्रदान करता है। दूसरा पदगलु अन्नमाचार्य संकीर्तन, नारायण तीर्थ के तरंग, आदि जैसी रचनायें जन साधारण के द्वारा गाई या सराही जा सकती हैं। उत्सव संप्रदाय कीर्तन, दिव्यनाम संकीर्तन इत्यादि के माध्यम से स्वयं सं. त्यागराज ने योगदान दिया है। बाद के समकालीन रचयिताओं द्वारा भी भजन जैसी कई अन्य रचनायें हुई हैं।

पाठ-8 : दिव्यनाम कीर्तन तथा उत्सव संप्रदाय कीर्तन

(विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर प्रत्येक विधा की कोई एक रचना गा पायेगा)

पाठ-9 : तरंग

(विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर कोई एक तरंग गा पायेगा)

पठ-10 : अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पुरंदर दास के पद (विद्यार्थी रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराये गये सी.डी. के माध्यम से सीखकर चयन किये गये रूप को गा पायेगा)

पाठ-11 : भजन

(विद्यार्थी सी.डी. के माध्यम से सीखकर अपने चयन किये गये रचयिता की राग पर आधारित कोई एक भजन गा पायेगा।)

नोट : इस कोर्स के लिये सी.डी. रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा उपलब्ध कराई जायेगी।

मूल्यांकन पद्धति

क्र.स.	मूल्यांकन की विधि	अवधि	अंक
1.	**थ्योरी - मोड्यूल I** **सामान्य संगीत शास्त्र**	**2 घंटे**	**40**
2.	**प्रैक्टिकल - मोड्यूल II + III** **मोड्यूल II कर्नाटक शास्त्रीय** **संगीत - 40 अंक** **मोड्यूल III कर्नाटक उप शास्त्रीय** **संगीत - 20 अंक**	**3 घंटे**	**60**

*** नोट : प्रैक्टिकल परीक्षा के लिए प्रत्येक विद्यार्थी के लिए लगभग 15 मिनट समय।*